ओ३म्

आर्य वन्दना

मूल्य ९ रूपये

हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

ऋषि गाथा

युग प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

एक दिन, एक ब्राह्मण स्वामी जी के पास आया। विनयपूर्वक नमस्कार करके उसने स्वामी जी के सामने पान निवेदन किया। महाराज ने सहज भाव से वह पान मुख में रख लिया, परन्तु उसका रस लेते ही वे जान गये कि यह विषयुक्त है! पर उन्होंने उस नराधम को कहा–सुना कुछ नहीं, परन्तु बस्ती और न्योली कर्म करने के लिए आप गंगापार चले गये। देर तक क्रिया करके फिर आसन पर आ विराजे। जैसे रूई में लपेटी हुई आग छुप नहीं सकती, ऐसे ही पाप भी छिपा नहीं रहता। स्वामी जी को विष देने का भेद किसी प्रकार तहसीलदार महाशय को भी ज्ञात हो गया। स्वामी चरणों में श्रद्धा होने के कारण अति कोपविष्ट होकर उसने तुरन्त उस पापिष्ट पामर को पकड़ मंगवाया और बन्दी गृह में डाल दिया। तत्पश्चात् स्वामी जी के दर्शनार्थ चला। मार्ग में प्रसन्नता से उसके हृदय में ये विचार उत्पन्न होते थे कि आज मैंने स्वामी जी के शत्रु को दंड देकर उनका बदला लिया है, इसलिए सम्मुख जाने पर वे प्रफुल वदन से आशीर्वाद देंगे। परन्तु निकट जाने पर जब स्वामी जी ने उससे दृष्टि हटा ली और बोलना बन्द कर दिया तो उसके आश्चर्य की कोई सीमा न रही। बड़ी प्रार्थना से तहसीलदार महाशय ने स्वामी जी से अप्रसन्नता का कारण पूछा। स्वामी जी ने कहा–''मैंने सुना है मेरे लिए आज आपने एक मनुष्य को आबद्ध किया है, **परन्तु मैं मनुष्यों को बंधवाने नहीं आया हूं, किन्तु छुड़वाने आया हूं। यदि दुष्ट अपनी दुष्टता को नहीं छोड़ते तो हम क्यों स्व–श्रेष्ठता का परित्याग करें ?"** ये शब्द सुनकर तहसीलदार के रोमांच हो आये। उसने आज तक क्षमा का ऐसा धनी प्रशांत पुरूष दूसरा न देखा था। वह महाराज को कर जोड़कर नमस्कार करके चला। उसने जाते ही उस ब्राह्मण को स्वतन्त्र कर दिया।

–श्रीमद्दयानन्द प्रकाश

।। हमारे पूर्वज।।

उन पूर्वजों की कीर्ति का वर्णन अतीव अपार है, गाते नहीं उन्हीं के गुण हम, गा रहा संसार है।
वे धर्म पर करते न्यौच्छावर तृण समान शरीर थे, उनसे वही गम्भीर थे, वरवीर थे, ध्रुवधीर थे।
उपदेश उनके शान्तिकारक थे, निवारक शोक के, सब लोक उनका भक्त था, वे थे हितैषी लोक के।

–गुप्त जी

यह अंक आर्य समाज चम्बा के सौजन्य से प्रकाशित किया गया तथा
आगामी अंक डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल, सुन्दरनगर के सौजन्य से प्रकाशित किया जाएगा।

अंक : ६५वां | विक्रमी सम्वत् २०६६ | सृष्टि सम्वत् १६६०८५३११३ | मार्च २०१३

।। बधाई हो बधाई ।।

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के माननीय प्रधान श्री सत्य प्रकाश मेहन्दीरत्ता जी ने हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय समरहिल, शिमला में 'स्वामी दयानन्द सरस्वती पीठ' की हिमाचल सरकार द्वारा स्थापना किये जाने पर प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप–प्रधान श्री कृष्ण चन्द आर्य एवं महामन्त्री श्री सत्यपाल भटनागर जी को प्रसन्नता प्रकट करते हुए बधाई पत्र लिखा, जिसे पत्रिका में अक्षरशः मुद्रित किया जा रहा है।

महोदय!

बहुत बड़ी सफलता व achievement आपने, हिमाचल आर्य जगत्/अन्तर्राष्ट्रीय आर्य समाज ने प्राप्त की है। **हिमाचल विश्वविद्यालय शिमला ने "स्वामी दयानन्द सरस्वती पीठ" की स्थापना करके उसे सक्रिय बना दिया है।** बहुत बड़ा कार्य आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश ने किया है। हिमाचल प्रदेश की प्रत्येक आर्य समाज का प्रत्येक सदस्य बधाई का पात्र है। रजिस्ट्रार, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय से मुझे प्राप्त पत्र एवं नोटिफिकेशन की फोटो कापी संलग्न है। आर्य वन्दना में शुरू के पृष्ठों में अपनी सूचना के साथ पत्र व नोटिफिकेशन को भी प्रकाशित करें। इस की प्रतियां देश की प्रतिनिधि सभाओं, संन्यासियों, विद्वानों एवं आर्य नेताओं को अवश्य भिजवायें।

धन्यवाद, आदर सहित!

भवदीय

सत्य प्रकाश मेहन्दीरत्ता

Himachal Pradesh University
General Administration Section
***

No. 9-17/90-HPU (Genl.) Vol.-3 Dated: 28 DEC 2012

"NOTIFICATION"

The Executive Council vide any other item of its meeting held on 17-09-2012 has approved to activate the following chairs in the University:-

1. Swami Daya Nand Saraswati Chair.
2. Dr. Shyama Prasad Mukherjee, Chair.

Registrar

Endst No. Even. Dated: 28 DEC 2012

Copy to:

1. The Dean of Studies/DSW/Chief Warden, HPU, Shimla-5
2. The Dean, CDC, H.P. University/All the Directors/ Honorary Directors of Institutes, Centres/Study Centres, H.P. University, Shimla-5.
3. All the Chairman / Chairperson of Teaching Departments, HPU.
4. The Finance Officer, HPU-Shimla-5/ The Joint Controller, LAD/ I.A.O., HPU, Shimla-5.
5. The Planning & Development Officer, H.P.U.
6. Incharge (Estt.)/ The Deputy Registrar(Academic), H.P. University.
7. The Assistant Registrar (Recruitment/Teaching), H. P. University, Shimla-5.
8. ... Vice-Chancellor/ Registrar, H.P. University, Shimla.
9. The Superintendent (Meeting), GAD, H.P.U.
10. The Guard file.

Registrar

No. 9-17/90- HPU(Genl.)- 3000
Himachal Pradesh University
General Administration Section

Dated: 11 FEB 2013

To

Sh. Satya Parkash Mehendiratta,
President,
Arya Pratinedhi Sabha,
Himachal Pradesh,
62, Krishna Enclave, Belanas
Seude(पिंजौर) Pinjoure
Teh. Kalka, Distt. Panchkulla
(Haryana)-134102.

Subject: Regarding establishment of Dayanand Chair in the University.

Sir,

I am to refer to your letter dated 19-11-2012 on the subject cited above and to inform you that 'Swami Dayanand Saraswati' Chair has been activated in the University. A copy of the notification is enclosed for your ready reference.

Yours faithfully,

Registrar

Encls : as above

मुख्य संरक्षक	: स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी महाराज, दयानन्द मठ, चम्बा मो. : 94180–12871
संरक्षक	: रोशन लाल बहल, पूर्व प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र0, मो. : 94180–71247
मुख्य परामर्शदाता	: सत्य प्रकाश मेहंदीरत्ता, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र. फोन : 01733.220060
परामर्शदाता	: रत्न लाल वैद्य, उप–प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र. मो. : 94184–60332
विधि सलाहकार	: प्रबोध चन्द सूद (एडवोकेट), आर्य समाज–कण्डाघाट मो. : 94180–20633
सम्पादक	: कृष्ण चन्द आर्य, महर्षि दयानन्द मार्ग, आर्य समाज, सुन्दरनगर (खरीहड़ी) मो. : 94182–79900
मुख्य प्रबन्ध–सम्पादक	: विनोद स्वरूप, कांगड़ा कालौनी, कनैड, सुन्दर नगर मो. : 94181–54988
प्रबन्ध–सम्पादक	: 1. सत्यपाल भटनागर, प्राचार्य, आर्य आदर्श विद्यालय, कुल्लू मो. : 94591–05378
	2. मोहन सिंह आर्य, गांव चुरढ़, तह. सुन्दरनगर मो. : 98161–25501
सह–सम्पादक	: राजेन्द्र सूद, 106, ठाकुर भ्राता, लोअर बाजार, शिमला
कोषाध्यक्ष	: मनसा राम चौहान, आर्य समाज, अखाड़ा बाजार, कुल्लू
मुद्रक	: प्राईम प्रिंटिंग प्रैस, शहीद नरेश कुमार चौक, सुन्दर नगर, (हि. प्र.)
नोट	: लेखकीय विचारों से सम्पादकीय व प्रकाशकीय सहमति आवश्यक नहीं है।

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक कृष्ण चन्द आर्य ने हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए छपवाकर हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा, उपकार्यालय मण्डी से प्रकाशित किया।

सम्पादकीय

हर बार बारह साल में आने वाला विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक मेला प्रयाग राज में धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस मेले में न केवल देश अपितु विश्व के कोने–कोने से श्रद्धालु, अपने ताप, सन्ताप और पाप को प्रयागराज जहां गंगा, यमुना और सरस्वती तीनों नदियों का संगम होता है, स्नान करके शुद्ध और पवित्र मानते हैं। यहां विश्व के कोने–कोने से भारी संख्या में पर्यटक भी इस मेले में पध ाारते हैं। साधु–महात्मा, नागा, वैष्णव, उदासी, निर्मल और अन्य सभी महात्मा पंक्तिबद्ध होकर गंगा में स्नान करने दल–बल सहित पहुंचते हैं। सरकार के अनुमान के अनुसार कुम्भ में दस करोड़ से अधिक लोग स्नान करेंगे। मौनी अमावस्या में लगभग तीन करोड़ भक्तों ने प्रयागराज, जिसे गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम स्थल कहा जाता है, में श्रद्धालुओं ने स्नान किया। अगला बड़ा स्नान बसंत पंचमी के दिवस पर हुआ। कुम्भ मेला विश्व का सबसे बड़ा मेला है जहां करोड़ों लोग त्रिवेणी संगम में स्नान करने तथा अपने पापों को गंगा मैया को सौंपने और शुद्ध पवित्र होकर अपने घरों की ओर प्रस्थान कर जाते हैं। सरकार द्वारा जनता के जमावड़े को सुव्यवस्थित करने के यद्यपि सभी प्रबन्ध चाक–चौबन्द कर दिये जाने के उपरांत भी एक बड़ी त्रासदी घटी और लोगों के भारी जमाबड़े और रेलमपेल में जहां तीस से अधिक व्यक्ति मृत्यु की गोद में चले गये, वहां १५० से अधिक व्यक्ति घायल हो गए। सरकार द्वारा सुन्दर एवं सुचारू प्रबन्ध होने के उपरांत भी यह दुर्भाग्यपूर्ण एवं दुखद घटना घट गई जिससे देश भर में शोक की लहर दौड़ गई। उत्तर प्रदेश सरकार और केन्द्र सरकार द्वारा मृतकों के परिजनों को सुनिश्चित सहायता दी गई और घायलों को भी निःशुल्क चिकित्सा दी जा रही है, जो सुखद बात है। टी. वी. पर महाकुम्भ में स्नान करने हेतु जा रहे नागाओं और अन्य अखाड़ों के साधु–सन्तों और महन्तों को गंगा की धारा में कूदते देखा। यह विश्वास श्रद्धालुओं की नस–नाड़ी में व्याप्त है कि महात्माओं के चरण गंगा में पड़ने से उनका पुण्य गंगा में आ जाता है। उस पानी में स्नान करने मात्र से सभी श्रद्धालुओं का पाप कट जाता है और उन्हें कालांतर में जीवन–मरण से मुक्ति मिल जाती है।

एक बार ऋषि दयानन्द जी महाराज हरिद्वार के कुम्भ मेले में पधारे, जिसका वर्णन स्वामी सत्यानन्द जी ने श्रीमद्दयानन्द–प्रकाश में इस प्रकार के किया गया है : ''हरिद्वार का कुम्भ–मेला समस्त आर्यावर्त में एक अद्भुत और अपुनम मेला होता है। साधु–सन्त, जपी–तपस्वी और चारों वर्ण के उत्तम, मध्यम और निकृष्ट कोटि के गृहस्थ लाखों की संख्या में दूर–दूर से वहां एकत्रित होते हैं। संन्यासियों और गुसाइयों के मठ, उदासियों और निर्मलों के अखाड़े, साधु–सन्तों से भर जाते हैं। वैरागी लोग सहस्त्रों की संख्या में वहां रहते हैं। अन्य छोटे–छोटे सम्प्रदायों के लोग भी अपनी–अपनी टोलियां बना कर वहां निवास करते हैं। मण्डलेश्वर साधु–महात्मा मण्डलियों सहित विभिन्न प्रदेशों में पर्ण कुटिया डालकर, कथा–वार्ता करते और शिष्यों से परस्पर वाद–वितण्डा करते हुए, अति गौरव सूचक ढंग से कालयापन करते हैं। परन्तु विरक्त संत इस कोलाहल–आकुल स्थान से दूर, एकांत और निर्जन भूभाग में रहकर आत्माकार वृति में निमग्न संन्यास धर्म का एक ज्वलन्त उदाहरण दिखाई पड़ते हैं। राजे–महाराजे, सेठ–साहूकार वहां आकर अपनी उदारता का द्वार खोल देते हैं। जप–तप, भजन–पाठ, पूजन–अराधना, ज्ञान–ध्यान और दान–पुण्य करते हुए सहस्त्रों नर–नारी उस समय, उस स्थान के वायुमण्डल को बदल देते हैं। सर्वत्र एक अपूर्व शोभा छा जाती है।

स्वामी दयानन्द महाराज ने ऐसे समय को अपने उद्देश्यों की उदघोषणा के लिए बहुत अनुकूल समझा। इसलिए कुम्भ सक्रांति के एक मास पूर्व, चैत्र सम्वत् १६२४ के आरम्भ में तदनुसार फाल्गुन सुदी ७ सं०१६२३ को वे हरिद्वार पधारे। वहां भीमगोडे के ऊपर सप्तस्त्रोत पर एक बाड़ा बांध कुछ पर्णकुटियां निर्माण कर वहां शंकरानन्द जी आदि पांच–छः जनों के साथ रहने लगे। महाराज ने सत्य के प्रचार के स्थान पर एक ''पाखंड खण्डनी'' नामक पताका स्थापित कर दी और प्रतिदिन सत्य का उपदेश करना आरम्भ कर दिया। जिस दिन साम्प्रदायिक धर्म की राजधानी में पौराणिक धर्म के केन्द्र में एक निर्भय आत्मत्यागी महात्मा ने सत्य का नाद बजाया, वह दिन धर्म के इतिहास में सदा स्मरणीय रहेगा। पौराणिक धर्म के उस गढ़ में उन्होंने वैदिक धर्म की घोषणा की। साम्प्रदायिक सघनवन पर समालोचना के कठोर कुठारा घात किये। पौराणिक कथा और महात्मय की कोमल, ललित, लताओं पर तीव्र खण्डन का प्रखर खड्गप्रहार किया। स्वामी जी महाराज के आश्रम पर झूलते हुए, निराले झण्डे को देखकर लोग शत–शत संख्या में भीतर चले जाते और उनमें से बहुतेरे स्वामी जी के कथनों को स्वीकार कर लेते थे। उस सारे महा–मेले में जहां सुनो श्रीमद्दयानन्द जी के प्रबल प्रचार की ही चर्चा सुनाई देती थी। आज तक लोगों ने एक सन्यासी के मुख से मूर्ति

पूजन का खण्डन, श्राद्धों का निराकरण, अवतारों का अमूलकपन, पुराणों तथा उपपुराणों का काल्पनिक होना और पर्व स्नान माहात्म्य का मिथ्यात्व नहीं सुना था। इसलिए कई लोग इस नवीन दृश्य को अति विस्मय से देखते थे। कई एक इसका दोष कलिकाल के माथे मढ़ते थे और कितने ही पण्डित, संन्यासी को 'नास्तिक' कहकर अपने शिष्यों–सेवकों और यजमानों का मुंह मूंदने की चेष्टा करते थे। पण्डितों और साधुओं ने स्वामी जी के विरूद्ध व्याख्यान देना भी आरम्भ कर दिया। उनके प्रति कुवाच्य कहने में भी उन्होंने कोई त्रुटि उठा न रखी थी। परन्तु वहां तो इतना भारी भूकम्प हो रहा था कि देव मालारूपी गिरिमाला उसके धक्के से बार–बार हिल–हिल जाती थी। बहुत से ब्राह्मण और साधु स्वामी जी की कुटि पर शास्त्रार्थ करने जाते और दो–एक प्रश्नोत्तर में ही निरूत्तर हो जाते थे।''

प्रयाग राज, नासिक, हरिद्वार का कुम्भ १२ साल बाद आता है। करोड़ों व्यक्ति अपने पाप की गठरी गंगा को देने कुम्भ स्नान हेतु आते हैं। तो क्या गंगा माता सभी के पाप धो डालती है ? यह एक बिडम्बना ही है कि इस देश में नाना प्रकार के अन्धविश्वासों और पाखंड़ों की दुकानें चलाकर स्वार्थी व्यक्ति मजे ले रहे हैं और भोली–भाली जनता को इस पाखंड जान में ऐसा फंसाते हैं कि वे इससे बचकर नहीं निकल पाते। हमारे शास्त्र सुकर्मों की खेती करने का आह्वान करते हैं। शास्त्रों के अनुसार तो किये गये पाप और पुण्यों का फल अवश्यमेव भोगना पड़ता है। ऋषिवर धर्म धुरन्धर देव दयानन्द से जब पूछा गया कि क्या आप पुराण ग्रन्थों को नहीं मानते ? तो स्वामी जी ने कहा ''इनका नाम पुराण ग्रन्थ नहीं अपितु गप्प–ग्रन्थ रखना चाहिए।'' स्वामी जी के अनुसार पुराण बनाने वाले ने एक से बढ़ कर एक बेसिरपैर की गप्पें इन ग्रन्थों में लिखी हैं। एक भक्त ने स्वाजी जी से पूछा, ''आप गंगा को क्या मानते हो ?'' स्वामी जी ने उत्तर दिया कि मैं भी वही मानता हूं जो तुम मानते हो, लेकिन सच–सच बोलो तुम क्या मानते हो ? उस व्यक्ति ने कहा, ''मैं गंगा को एक नदी मानता हूं।'' स्वामी जी बोले, ''बस मैं भी वही मानता हूं।'' एक व्यक्ति के प्रश्न के उत्तर में कि आपके लिए गंगा कितनी है ? स्वामी जी ने अपना कमण्डल उठाते हुए कहा, ''मेरे लिए गंगा इतनी है।'' अर्थात् मेरी प्यास शांत करने हेतु बस कमण्डल भर जल की आवश्यकता होती है। हिन्दी के रीतिकालीन कवि बिहारी लाल ने एक दोहे में लिखा :

अति अगाध अति औथरे नदी, कूप, सर वाय
वो ताको सागर जहां जाकि प्यास बुझाए।

एक व्यक्ति विशेष के लिए तो वही महान् है जहां उसकी प्यास शांत होती हो। आर्य समाज के सिद्धान्तों को स्वीकार करने में दम्भी व्यक्तियों पर उनकी दम्भ और पाखण्ड की दुकानों के बन्द रहने का खतरा सर्वदा मंडराता रहता है। इसलिए वे आर्य समाज और ऋषि दयानन्द के सत्य पर आधारित सिद्धांतों को स्वीकार करने में कतराते रहते हैं। ऋषिवर किसी भी परिस्थिति में सत्य का त्याग करना नहीं जानते थे। उनके लिए सत्य ही सबसे बड़ा धर्म और कर्म रहा। अन्धविश्वासों, पाखण्डों का खंडन उन्होंने अपने प्रमाणों, युक्तियों और तर्कों से किया। बहुत समय पूर्व एक महिला मेरे पास आकर कहने लगी–आर्य जी, सच पूछो तो मैं स्वामी दयानन्द के खंडन–मंडन को हिन्दु समाज पर कलंक मानती रही। लेकिन अब मेरी आंखें इन कपटी साधुओं के कुकृत्यों ने खोल दी हैं। जिन्हें मैं पैगम्बर से भी अधिक आदर देती थी, उनकी घटनाओं ने मेरे मोह के पर्दे को साफ कर दिया है। मेरे अनुरोध करने पर कि आप के जीवन में अचानक यह परिवर्तन कैसे आया ? उस महिला ने कुछ इस प्रकार से अपने बिचार रखे : हम सहेलियां बाबा जी के कैम्प में गई। वहां पहले एक हाल में सभी ने बैठ कर ध्यान लगाया। अंत में महात्मा जी कमरे में चले गये और बाद में एक महिला जिन्हें महात्मा जी बुलाते थे, उनके कमरे में प्रवेश करती थी। महात्मा जी की अति प्रिय महिला भक्त उसे भीतर ले जाती और महात्मा जी एकांत में उसे गुरू दीक्षा देते। इस प्रकार मुझे भी बुलाया गया। महात्मा जी ने मुझे आज्ञा दी कि निर्वस्त्र हो जाओ। मैं पसीना–पसीना हो गई। मैंने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि यह साधु इस हद तक गिरा होगा। मैंने उत्तर दिया कि मैं अपने पति के अतिरिक्त और किसी के सामने निर्वस्त्र नहीं हो सकती। मैं गुस्से से बाहर निकल आई और दूसरी बार इस ढ़ोंगी साधु के पास नहीं गई। मुझे स्वामी दयानन्द की बातों से प्रेम हो गया और अन्ध श्रद्धा, अन्ध भक्ति और अन्धविश्वास को तिलांजलि दे दी। अब मैं आर्य समाज को हिन्दू समाज पर कलंक नहीं अपितु मानव धर्म का प्रचार–प्रसार करने वाला अंग मानती हूं। अब हमें सोचना पड़ेगा कि इस देश में फैले पाखण्डों से कैसे दो–दो हाथ किये जाएं। हमें मैथिलीशरण गुप्त जी की इन पंक्तियों की ओर जीवन सुधारने हेतु विचार करना होगा :

हम क्या थे, क्या हैं, क्या होंगे अभी,
आओ मिलकर विचारें ये समस्याएं सभी।

–कृष्ण चन्द आर्य

आर्य समाज चम्बा के पदाधिकारियों का परिचय

श्रीमती कौशल्या देवी (उप–प्रधान) :

श्रीमती कौशल्या देवी का जन्म सन् १६३० में हुआ। बचपन से ही इन्हें आर्य समाज से संस्कार प्राप्त हुए। सन् १६४५ में विवाह हुआ। इनके पति आर्य विचारों के नहीं थे परन्तु इन्होंने अपने विचारों की छाप उन पर पर्याप्त डाल दी। वे भी नियमित आर्य समाज आते रहे। इनकी दो बेटियां व तीन बेटे हैं। सभी आर्य संस्कारों से संस्कारित हैं। आर्य समाज चम्बा में उप प्रधान पद पर भी कार्य किया। घर में दैनिक यज्ञ करती हैं। यज्ञ के प्रति गहरी निष्ठा होने से इनका कहना है कि जैसे भोजन करने से शरीर की भूख मिटती है वैसे ही यज्ञ करने से अन्तरात्मा की भूख मिटती है। वेद प्रचारार्थ हरिद्वार, जम्मू, अजमेर, दिल्ली, अमृतसर, कांगड़ा आदि स्थानों में जा चुकी हैं। वृद्धावस्था में प्रवेश करने पर भी आर्य समाज के प्रत्येक कार्यक्रमों में व यज्ञ में इनकी उपस्थिति शतप्रतिशत बनी रहती है।

श्रीमती निरंजना चोपड़ा (कार्यकारिणी सदस्य) :

श्रीमती निरंजना चोपड़ा का जन्म सन् १६३० में दीनानगर पंजाब में हुआ। इनके पति श्री मदन गोपाल चोपड़ा आर्य समाजी परिवार के थे। इनके पिता श्री हकीम ईश्वर चन्द्र दीनानगर के सुप्रसिद्ध व्यक्ति व आर्य वीर दल व दंगल के संचालक रहे हैं। इनके पांच बेटे व दो बेटियां हैं। सन् १६४७ में विवाहोपरान्त चम्बा आगमन हुआ। इनका विवाह संस्कार दयानन्द मठ दीनानगर के अध्यक्ष स्वामी सर्वानन्द सरस्वती ने करवाया था। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के चरणों में इन्हें विद्याध्ययन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आर्य समाज की सेवा इनका मुख्य उद्देश्य है। इनकी हार्दिक इच्छा है कि मेरा अगला जन्म भी आर्य समाज में ही हो। इस समय आर्य समाज की सक्रिय कार्यकर्त्री व अन्तरंग सदस्या भी हैं। आर्य समाज के प्रत्येक सत्संगों में इनकी उपस्थिति बनी रहती है।

श्रीमती विष्णु देवी (उप–प्रधान) :

आर्य समाज चम्बा की उप–प्रधान श्रीमती विष्णु देवी का जन्म सन् १६२८ में हुआ। इन्हें माता–पिता से पौराणिक विचार प्राप्त हुए थे। परन्तु सन् १६४७ में पं. अमरनाथ से शादी हुई तो विचारों में तुरन्त परिवर्तन हुआ। क्योंकि पं. अमरनाथ जी उपदेशक विद्यालय लाहौर के स्नातक और आर्य समाज के महानिदेशक थे। इनके चार बेटे व चार बेटियां हैं। सभी आर्य समाज की विचारधारा से ओत–प्रोत हैं। विष्णु देवी जी आर्य समाज चम्बा में चार वर्ष तक मन्त्री पद पर रहीं। आज भी आर्य समाज के प्रत्येक सत्संग में आती हैं घर में दैनिक यज्ञ कर अपने जीवन का परम लक्ष्य समझती हैं। महर्षि दयानन्द की विचारधारा को जन–जन तक पहुंचाने में प्रयासरत हैं।

श्रीमती सन्तोष शर्मा (कोषाध्यक्ष) :

आर्य समाज चम्बा में महिला मण्ड़ल में सक्रिय कार्यकर्त्री के रूप में जानी जाती हैं। श्रीमती सन्तोष शर्मा सार्वजनिक वितरण विभाग में कार्यरत स्वर्गीय श्री सांई दास की धर्मपत्नी हैं। श्रीमती सन्तोष शर्मा को आर्य समाज के विचार बचपन में ही अपने माता–पिता से मिले। ७२ वर्षीय कर्मठ, यज्ञनिष्ठ एवं सर्वस्नेही स्वभाव वाली यह महिला आर्य समाज चम्बा की प्राण कही जाती हैं। इनका समस्त परिवार आर्य विचारों से ओत–प्रोत है। आर्य समाज चम्बा में संचालित डॉ० विमला प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र में मुख्याध्यापिका पद पर अत्यन्त निष्ठा से अनेक वर्षों तक कार्य किया। सेवा इनका लक्ष्य है तथा मधुर व्यवहार इनका स्वभाव है। वर्तमान समय में आर्य समाज चम्बा में कोषाध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं।

श्री सूरत राम शास्त्री :

श्री सूरत राम शास्त्री का जन्म सन १६४८ में गांव अम्बोट बिलासपुर हि. प्र. में हुआ। हिसार से विद्यावाचस्पति करके आर्य समाज लारेन्स रोड़ अमृतसर में रहकर शास्त्री तथा दर्शनाचार्य की। दर्शन, उपनिषद् और वेद में इनकी विशेष रूचि हैं। सन् १६७६ में इनका विवाह श्रीमती सुनीता शर्मा से हुआ। मण्डी में आर्य विद्वान् श्री केवल राम भ्राता जी से सम्पर्क हुआ। उनसे आर्य समाज के विचार प्राप्त हुए। सन् १६७५ से निरन्तर आर्य समाज चम्बा की सेवा में लगे हैं। प्रचार मन्त्री, मन्त्री, उपमन्त्री, उपप्रधान आदि पदों पर कार्य कर चुके हैं। वर्तमान समय में आर्य समाज चम्बा में प्रचार मन्त्री पद पर कार्यरत हैं।

श्री सुख लाल शास्त्री (उप–मंत्री) :

श्री सुख लाल शास्त्री दयानन्द मठ दीनानगर से शास्त्री एवं हि. प्र. विश्वविद्यालय से आचार्य कक्षा उतीर्ण कर अत्यन्त विनम्र एवं सरल स्वभाव वाले कर्मठ कार्यकर्ता हैं। सन् १६७४ में चम्बा पधारे। सर्वप्रथम दयानन्द मठ चम्बा में अध्यापन कार्य किया तत्पश्चात् सरकारी सेवा में कार्यरत होकर आर्य समाज चम्बा में सक्रिय कार्यकर्ता हैं। वर्तमान समय में आर्य समाज चम्बा में उपमन्त्री पद

पर कार्यरत हैं।

श्री महावीर सिंह आचार्य (परामर्शदाता)

श्री महावीर सिंह दयानन्द मठ दीनानगर से शास्त्री कक्षा उत्तीर्ण कर तथा हि. प्र. वि. वि. शिमला से एम. ए. एवं उतर प्रदेश से आर्यवेद रत्न उत्तीर्ण की। पौड़ी गढवाल के निवासी, गुरू भक्त, निष्ठावान एवं सरल स्वभाव वाले कर्मठ कार्यकर्ता हैं। दयानन्द मठ चम्बा में सन् १९७६ से सेवा कार्य में तत्पर हैं। पूज्य स्वामी सुमेधानन्द के अनन्य सहयोगी इस समय दयान्नद मठ चम्बा के प्रबन्धक पद पर सेवारत हैं। सम्पूर्ण परिवार वैदिक विचारधारा से ओतप्रोत हैं।

श्रीमती सरस्वती देवी :

दिल्ली में श्रीमती सरस्वती देवी का विवाह ६ मार्च १९८० को स्वामी सुमेधानन्द के अनन्य शिष्य श्री महावीर सिंह से हुआ। श्रीमती सरस्वती देवी संस्कारित सद् गृहिणी हैं। मधुर कण्ठ की प्रकृति ने इनको स्वरलहरी का दायित्व सम्भालने की प्रेरणा दी हैं। इन्होंने वैदिक भजनों का संग्रह रूप ''सरस्वती संगीत सरिता'' नामक कैसेट भी बनबाई है। अतिथि सेवा, मधुरवाणी, सौहार्दता, शालीनता, विनम्रता और आस्तिकता इनके जीवन के स्तुत्य गुण हैं।

श्री विक्रमादित्य महाजन (मन्त्री) :

श्री विक्रमादित्य महाजन आर्य परिवार में जन्मे सुसंस्कारित सद्गृहस्थी एवं लग्नशील आर्य समाज चम्बा के कर्मठ कार्यकर्ता है। आपके पिता सुप्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी स्व. श्री अमरनाथ महाजन एवं माता का नाम श्रीमती विष्णुदेवी है। सम्पूर्ण परिवार आर्य विचारधाराओं से ओत–प्रोत व संस्कारित है। आर्य समाज चम्बा के प्रत्येक कार्यक्रमों व सत्संगो में इनका सराहनीय योगदान है। वर्तमान समय में आर्य समाज चम्बा में मन्त्री पद पर सेवारत हैं तथा आर्य समाज द्वारा संचालित 'आर्य हाई स्कूल, चम्बा' के अध्यक्ष हैं। इनकी कार्यकुशलता के परिणाम स्वरूप विद्यालय का सर्वांगीण विकास हुआ है।

श्री भगवती प्रसाद पंत (प्रधान) :

श्री भगवती प्रसाद पन्त, उम्र ७१ वर्ष का जन्म अल्मोड़ा जनपद उतराखण्ड में हुआ। पूर्व में एक कट्टर पौराणिक परिवार से सम्बन्धित थे। लगभग २५ वर्ष तक पौराणिक विचारधारा में रहे। सन् १९६२ से आर्य समाज से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करना आरम्भ किया। इसी से विचारों में परिवर्तन हुआ। वर्ष १९६५ में आर्य समाज चम्बा के संस्थापक स्वामी शान्तानन्द जी से सम्पर्क हुआ। तब तक आर्य समाज के बारे में अनेक शंकाए थी उनका निराकरण हुआ। जिससे आर्य समाज चम्बा के पूर्णरूपेण सदस्य बन गए। आर्य समाज चम्बा में वर्ष १९६६ से कोषाध्यक्ष, मन्त्री, तकनीकी सलाहकार के रूप में कार्य करते रहे। वर्तमान समय में आर्य समाज चम्बा में वर्ष २००५ से प्रधान के पद पर कार्यरत हैं। श्री भगवती प्रसाद पंत हि. प्र. लोकनिर्माण विभाग में वर्ष १९५८ में कनिष्ठ अभियन्ता के पद पर नियुक्त होकर वर्ष १९९७ में अधिशाषी अभियन्ता के पद से सेवानिवृत हुए। आर्य समाज के प्रति पूर्णरूपेण समर्पित निष्ठावान कार्यकर्ता के रूप में कार्य हेतु वे एक अच्छे भजनीक भी हैं। वर्तमान समय में आर्य समाज चम्बा के प्रधान पद पर आसीन हैं।

श्री माधो राम :

श्री माधो राम का जन्म ६ नबम्बर सन् १९१८ को पुखरी चम्बा में हुआ। हाई स्कूल तक की शिक्षा इन्होंने गुरू रामशरण जी की प्रेरणा से प्राप्त की। सन् १९३७ में आर्य समाज की पाठशाला में अध्यापन किया तथा गुरू रामशरण जी के आदेशानुसार गांव–गांव में हिन्दी सिखाने का कार्य किया। सादा जीवन एवं उच्च विचार इनके जीवन का लक्ष्य है।

श्रीमती सुभाष रानी (कार्यकारिणी सदस्य) :

श्रीमती सुभाष रानी आर्य समाज चम्बा की कर्मठ व सरल स्वभाव की कार्यकर्त्री हैं तथा वैदिक विचारधार से ओत प्रोत हैं। इनका जन्म एक आर्य परिवार में हुआ। महर्षि दयानंद के प्रति अगाध श्रद्धा है तथा आर्य समाज चम्बा के प्रत्येक समारोह में इनका विशेष योगदान रहता है। इनके पति व ससुर भी आर्य समाज चम्बा के समर्पित कार्यकर्ता हैं।

श्रीमती शान्ता सल्होत्रा (कार्यकारिणी सदस्य) :

श्रीमती शान्ता सल्होत्रा पूर्वमन्त्री स्वर्गीय श्री श्याम लाल सल्होत्रा की धर्मपत्नी व आर्य समाज चम्बा की समर्पित कार्यकर्त्री हैं। जिला शिक्षा प्रशिक्षण संस्थान सरू चम्बा से प्राचार्या पद से सेवानिवृत होकर लगभग आठ वर्षों तक आर्य पब्लिक हाई स्कूल की प्राचार्या रहीं। आर्य समाज के कार्यो में इनका सराहनीय योगदान है। वर्तमान

समय में आर्य समाज की सदस्य व आर्य पब्लिक हाई स्कूल की सलाहकार हैं। वैदिक विचारधारा इन्हें अपने माता–पिता से विरासत रूप में मिली।

श्रीमती रूक्मणी देवी (कार्यकारिणी सदस्य) :

श्रीमती रूक्मणी देवी का जन्म १५ फरवरी १९५२ को पुखरी चम्बा में आर्य परिवार में हुआ। इनके पति श्री बलदेव जरयाल भी आर्य विचारधारा से ओत–प्रोत हैं। आर्य समाज चम्बा के प्रत्येक सत्संगो व कार्यक्रमों में इनका सहयोग सराहनीय है।

श्रीमती पुष्पा आर्या (कार्यकारिणी सदस्य) :

श्रीमती पुष्पा आर्या का जन्म १६ अगस्त १९५७ को पुखरी चम्बा में आर्य परिवार में हुआ। पूरा परिवार आर्य विचारधारा से ओतप्रोत है। आर्य विचार इन्हें अपने माता–पिता से विरासत रूप में प्राप्त हुए। आर्य समाज के कार्यक्रमों में इनका योगदान प्रशंसा के योग्य है।

श्री बलदेब सिंह जरयाल :

श्री बलदेव सिंह जरयाल आर्य समाज चम्बा के अन्तरंग सदस्य है। तथा आर्य विचारधारा से ओत–प्रोत हैं। आर्य समाज के कार्यक्रमों में व सत्संगों में विशेष सहयोग रहता है।

सेवानिवृति

•डॉ. दिनेश शर्मा, अध्यक्ष, वृद्धाश्रम भंगरोटू की धर्मपत्नी श्रीमती मन्जूलता की खंड प्राथमिक शिक्षा अधिकारी, बल्ह की सेवानिवृति पर प्राथमिक अध्यापकों ने शुभ कामना दी और उनके कार्यों की भूरी–भूरी प्रसंशा की।

•सुन्दरनगर के समाजसेवी सुप्रसिद्ध डॉ. आर. के. गुप्ता की धर्मपत्नी श्रीमती पद्मा गुप्ता, सी. एच. टी. पुराना बाजार की सेवानिवृति पर प्राथमिक खंड सुन्दरनगर के अध्यापक वर्ग ने उन्हें सस्नेह विदाई दी और उनके दीर्घ जीवन की कामना की।

शोक समाचार

सुन्दरनगर के रोपा वार्ड के श्री किशोरी लाल सैनी की माता ६८ वर्षीय श्रीमती टिभली देवी जी का देहावसान हो गया। उनके सुपुत्र श्री किशोरी लाल सैनी ने अपनी माता की बहुत सेवा की। माता–पिता की उनके जीवन काल में सेवा करने का एक अनुपम उदाहरण श्री किशोरी लाल सैनी ने समाज के समक्ष रखा है, जो अतीव सराहनीय कार्य है। दिवंगत आत्मा को प्रभु अपनी व्यवस्था में शांति प्रदान करे। आर्य वन्दना के आजीवन ग्राहक श्री गोबिन्द सिंह सेन जी की ६२ वर्षीय बहन के अचानक देहावसान पर आर्य वन्दना परिवार की ओर से दुःख व्यक्त किया। ८५ वर्षीय श्री पदमनाभ गुप्ता, दुकानदार का अचानक निधन हो गया। वे पूर्व डी. आई. जी. दामोदर दास गुप्ता और नन्द लाल गुप्ता टेलर मास्टर के बड़े भाई थे।

प्रभु दिवंगत आत्माओं को शांति प्रदान करे।

आर्य समाज चम्बा की कार्यकारिणी के सदस्यों एवं पदाधिकारियों की सूची

दूरभाष (आर्य समाज, चम्बा) : ०१८९९–२२३३१३

स्वामी सुमेधानन्द जी	दयानन्द मठ चम्बा
संरक्षक	फोन : ९४१८०–१२८७१
श्री भगवती प्रसाद पंत	मुहल्ला बनगोटू, चम्बा
प्रधान	फोन : ९४१८१–०८५३०
श्री बिवक्रमादित्य महाजन	न्यु कालौनी, परेल, चम्बा
मन्त्री	फोन : ९४१८६–८१२५०
श्रीमती विष्णु देवी	बालू बाजार, चम्बा
वरिष्ठ उपप्रधान	फोन : ९७३६७–०८७२७
श्रीमती कौशल्या देवी	मुहल्ला कश्मीरी, चम्बा
उप–प्रधान	फोन : ०१८९९–२२२६३१
श्रीमती सन्तोष शर्मा	मुहल्ला सपड़ी, चम्बा
कोषाध्यक्ष	फोन : ९८८२८–९४९४५
श्री महावीर सिंह	दयानन्द मठ, चम्बा
परामर्शदाता	फोन : ९८०५०–२२८७१
श्री खुशहाल चन्द बक्शी	मुहल्ला सुराड़ा, चम्बा
सहायक परामर्शदाता	फोन : ९८१९८–९९७७१
श्री सुख लाल शास्त्री	मुहल्ला मुगला, चम्बा
उप–मन्त्री	फोन : ९७३६६–०६७१८
श्री मुकेश शर्मा	मुहल्ला चमेशनी, चम्बा
सह–कोषाध्यक्ष	फोन : ९४१८०–२३९२३

सदस्य :

श्रीमती सुभाष रानी पुरी	मुहल्ला रंग महल रोड, चम्बा फोन : ०१८९९–२२२८८०
श्रीमती निरंजना चोपड़ा	मुहल्ला सपड़ी, चम्बा फोन : ९४१८९–२७९९१
श्रीमती शन्ता सल्होत्रा	मुहल्ला हरदासपुरा, चम्बा फोन : ९४१८५–९१३३०
श्रीमती अनूपा पंत	मुहल्ला बनगोटू, चम्बा फोन : ९४१८३–२५०६७
श्रीमती रूकमणि जरियाल	मुहल्ला जुलाकड़ी, चम्बा फोन : ०१८९९–२२५१२०
श्रीमती पुष्पा आर्या	मुहल्ला जुलाकड़ी, चम्बा फोन : ९८१९९–६००६१

आर्य समाज चम्बा के संस्थापक स्वामी शान्तानन्द सरस्वती

•विक्रमादित्य महाजन, मन्त्री, आर्य समाज चम्बा

आर्य समाज चम्बा के संस्थापक स्वामी शान्तानन्द सरस्वती का जन्म पंजाब प्रान्त के गुरदासपुर जिले के कंजरूड़ नामक गाांव में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री किरपा राम तथा माता का नाम श्रीमती रूक्मणी देवी था। इनका बचपन का नाम रामशरण था। इनका जन्म ब्राह्मण परिवार में हुआ। चम्बा के लोग इन्हें गुरू जी कह कर पुकारते थे। अल्पायु में ही इनका विवाह हो गया। इनकी पत्नी का नाम श्रीमती दुर्गा देवी था। चम्बा में इनका ननिहाल था। सन् १९१४ में चम्बा में राजा राम सिंह राज्य करते थे। चम्बा में फारसी का अध्यापक न होने से इन्हें राजा राम सिंह द्वारा कंजरूड़ पंजाब से चम्बा बुलाया गया। तब से वे चम्बा में फारसी अध्यापन कार्य के साथ–साथ आर्य समाज का कार्य करने में भी जुट गए।

चम्बा में गुरू रामशरण जी श्री गोपाल दास चिपड़ा के घर पर किराये पर रहे। गोपाल दास चिपड़ा की कोई सन्तान न थी। वृद्धावस्था आने पर उन्हें लकवा हो गया। गुरू रामशरण जी ने लगभग सात आठ वर्ष तक उनकी निष्काम भाव एवं तन–मन–धन से सेवा की, उनका मल–मूत्र अपने हाथों से साफ किया। गुरू रामशरण के उच्च जीवन का गोपाल दास चिपड़ा पर बहुत प्रभाव पड़ा। उनकी निष्काम सेवा–भाव से सन्तुष्ट होकर श्री गोपाल दास चिपड़ा ने अपनी सम्पूर्ण सम्पति इन्हें दान कर दी। गुरू रामशरण एक गृहस्थी होते हुए भी दानस्वरूप प्राप्त सम्पूर्ण भूमि व सम्पत्ति, स्वार्थ से ऊपर उठते हुए परमार्थ हेतु आर्य समाज के नाम दान कर दी। सन् १९२८ में चम्बा में हलवाई गली में आर्य समाज का भवन इनके अथक प्रयास से बनाया गया। तत्पश्चात सन् १९३२ में हटनाला मुहल्ला में नए आर्य समाज के भवन का निर्माण शुरू किया।

चम्बा में आर्य समाज की स्थापना गुरू रामशरण द्वारा उस समय की गई जब यहां राजा के शासन में दलितों का शोषण हो रहा था। हिन्दु समाज अनेकों कुरीतियों पाखण्डों में जकड़ा हुआ था। दलित वर्ग मुसलमान व ईसाई बनते जा रहे थे। आर्य समाज जैसी संस्था का किसी को नाम तक पता न था। छुआ–छूत जातपात का सर्वत्र बोलबाला था। ऐसे समय में इन्होंनें चम्बा में इन सब कुरीतियों का समूल नाश किया।

चम्बा रियासत में गुरू रामशरण ने दलितों का उद्धार किया। उन्हें यज्ञोपवीत संस्कार करवाकर उनकी शिक्षा की भी व्यवस्था की इससे हजारों दलित उनके शिष्य बन गए। उन्होंने नारी जाति के उत्थान हेतु विशेषकर दुर्दिन भोग रही विधवाओं की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया। क्योंकि महर्षि दयानन्द का मानना था कि हम मनुष्य जाति की सम्पूर्ण उन्नति तब तक सम्भव नहीं जब तक नारी जाति शिक्षित नहीं हो जाती। उन्होंने नारी जाति को शिक्षित करने हेतु अधिक परिश्रम कर व लोगों से चन्दा मांग–मांग कर विधवाओं व दीनहीन महिलाओं की शिक्षा की उत्तम व्यवस्था की।

गुरू रामशरण जी ने शुद्धि कार्य चम्बा के दूर दराज गांवों में पैदल जाकर किया। उन्होंने देखा कि चम्बा में लोग मुसलमान व ईसाई बनते जा रहे हैं। जो लोग अस्पृश्य कहे जाते थे गुरू जी उन लोगों के घरों में जाते थे। हवन कराते और उन सब लोगों को आर्य बना देते। उन्होंने उन लोगों में आत्मविश्वास जागृत किया। स्वाभिमान को जागृत किया। यदि उन दिनों को न सम्भालते तो आज चम्बा की चुराह तहसील पूरी तरह मुसलमान व ईसाई बन गई होती। उन दिनों यातायात के इतने साधन नहीं थे। वे सब जगह पैदल ही जाते।

गुरू रामशरण में निष्काम भाव से सबका उपकार करने की इतनी प्रबल इच्छा थी कि आज का जो इतना बड़ा भवन आर्य समाज का चम्बा में दिखाई देता है वह उनके द्वारा तन–मन–धन से की गई सेवा का ही प्रतिरूप हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती के सन्देशों को चम्बा निवासियों तक पहुंचाने का श्रेय इन्हीं को जाता हैं। इन्होंने जातपात, छुआछूत अन्धविश्वास तथा कुरीतियों का समूल नाश किया। शिक्षा के प्रसार में अपने जीवन को वे न लगाते तो न जाने कितनी विधवा बहनें तथा प्रौढ़ अशिक्षित लड़कियां शिक्षा प्राप्त करके अपनी आजीविका कमाकर परिवार का पालन–पोषण करती रही, कहां होतीं और क्या करतीं ? वे शिक्षा व्ययार्थ हर दुकान से एक–एक आना मांग कर लाते थे क्योंकि उनका ध्येय यही तो था :

"मर जाऊं मांगू नहीं अपने तन के काज।
परमारथ के कारने–मोहि न आवत लाज।।

वे अपने लिए नहीं, निर्धन व्यक्तियों व विधवाओं की शिक्षा के लिए मांगते थे। देश प्रेम उनमें कूट–कूट कर भरा हुआ था। वे खादी के ही वस्त्र पहनते थे। उन्होंने विद्यालय में भूषण प्रभाकर की कक्षाओं में भी ऐसे ही भाव भरे कि विद्यार्थियों ने भी खादी वस्त्र पहनने शुरु कर दिए। उदारता तो उनमें स्वाभाविक ही थी। इतने कट्टर आर्य समाजी होते हुए भी वे कट्टर पौराणिक

परिवारों में जाते थे। कभी भी उन्होंने किसी धर्म का विरोध नहीं किया। उन्होंने सिर्फ कुरीतियों, पाखण्ड़ों तथा अन्धविश्वासों का जम कर विरोध किया। अपनी बात को इतने उदार ढ़ंग से रखते कि किसी को उनके प्रति कभी शिकायत नहीं हुई। बल्कि हर मनुष्य क्या मुसलमान, क्या ईसाई, सनातनी, सिख सब उनका सम्मान करते थे। सभी धर्मों व सम्प्रदायों के लोग उनका सम्मान करते थे।

फारसी अध्यापक होते हुए भी हिन्दी और संस्कृत के प्रति उनका कितना लगाव था, यह उनके कार्य से ही लक्षित होता है। विद्यालय में हिन्दी की कक्षाएं शुरु की और छात्रों व छात्राओं को संस्कृत पढ़ने के लिए प्रेरित किया। वे छात्र–छात्राओं को उपनिषद, वेद व ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका पढ़ाते थे। वैदिक धर्म के प्रति लोगों में श्रद्धा जागृत की। इनके अथक प्रयास व प्रेरणा से आज आर्य लोग राजकीय उच्च सेवाओं में कार्यरत हैं। कुछ सेवानिवृत हो चुके हैं। इनमें पं. विद्याधर जी हिमाचल प्रदेश सरकार में मन्त्री के पद पर कई वर्षों तक विराजमान हुए तथा मोहन लाल भी मन्त्री रह चुके हैं।

गुरू रामशरण जी अद्भुत महापुरुष थे। कदाचित इन्होंने पंजाब में कार्य किया होता तो सारा आर्य जगत उनसे परिचित होता। किन्तु इस पिछड़े प्रदेश में उनके अद्भुत कार्यों का वर्णन किसी पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित न होने के कारण बाहर की आर्य जनता इस अद्वितीय महापुरुष से अपरिचित रह गई। श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित इस अद्वितीय महापुरुष के अनुसार उनकी निष्ठा थी। सन् १६५६ में विद्यालय को सरकार को सौंपकर स्वयं चम्बा से चले गए और बाद में संन्यास ग्रहण कर स्वामी शान्तानन्द सरस्वती के नाम से प्रसिद्ध हुए। जब उनकी सुपुत्री डॉक्टर विमला की इहलीला समाप्त हो गई तो गुरू जी फिर चम्बा आ गए और संस्कृत आदि पढ़ाने में संलग्न रहे।

२८ फरवरी सन् १६६६ को वे भी अपने ध्येय को पूर्ण करके इस उक्ति को चरितार्थ करके–

"वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही।।"

कर्मयोगी का जीवन व्यतीत कर परलोक सिधार गए। यद्यपि २७ फरवरी १६६६ शाम चार बजे अपना अन्त्येष्टि यज्ञ करवाया और प्रेरणा दी कि इसी अग्नि से मेरा अन्तिम संस्कार करना। परन्तु हम सबको तब भी पूर्ण विश्वास नहीं हुआ और सचमुच इसी उक्ति को चरितार्थ किया :–

"पानी केरा बुदबुदा अस मानुष की जात।
देखत ही छिप जाएगा, ज्यों तारा प्रभात।।"

ठीक २८ फरवरी १६६६ प्रातः पांच बजे जब प्रभात के तारे छुपने लगते हैं और सूर्य उदय होने लगता है परन्तु चम्बा का सूर्य उस समय अस्त हो गया। स्वामी शान्तानन्द जी चम्बा नगरी के लिए फरिश्ता बन कर आए और यहां आर्य समाज की स्थापना कर, देश व जाति का उपकार कर, महर्षि दयानन्द की वैदिक धर्म की मान्यताओं को फैला कर चले गए। अन्त में कवि की ये पंक्तियां उनके प्रति कहना चाहूंगा :

"कोई रोकर मरता है कोई हंस कर मरता है।
जग उसको याद करता है, जो कुछ करके मरता है।।"

आर्य समाज चम्बा में कन्या संस्कृत महाविद्यालय लगभग दस–बारह वर्षों तक चलता रहा। जिसमें छात्रावास की भी सुविधा थी। जिसमें दूर–दूर की छात्राएं शिक्षा प्राप्त करती थी। पूरे हिमाचल में अपने प्रकार की यह पहली शिक्षण संस्था थी। परन्तु आर्थिक संकट एवं बाहरी सहयोग की कमी के कारण सन् १६६२ में यह विद्यालय बन्द करना पड़ा। इसमें अध्ययनरत् छात्राएं सांय प्रातः हवन यज्ञ करती थीं और आर्य समाज के विशेष यज्ञों में वेद पाठ करती थीं।

वर्तमान समय में आर्य समाज चम्बा में दो विद्यालय चल रहे हैं। जिसमें डॉ० विमला प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र एवं आर्य पब्लिक हाई स्कूल हैं। डॉ० विमला प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र सन् १६६६ से आज तक सुचारू रूप से चल रही हैं। जिसमें सैंकड़ों प्रौढ़ छात्र–छात्राएं कक्षा प्रथम से पंचम तक निःशुल्क शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। इन बच्चों को किताबें, कापियां, वर्दियां व शिक्षा की व्यवस्था आर्य समाज की ओर से दी जाती है। दूसरा विद्यालय आर्य पब्लिक हाई स्कूल कक्षा नर्सरी से दशम् तक चल रहा है। जिसमें लगभग दो सौ के लगभग बच्चे शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। इस विद्यालय में हिन्दी के साथ–साथ अंग्रेज़ी शिक्षा पर विशेष बल दिया जाता है। बच्चों के चरित्र निर्माण एवं धार्मिक शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाता है। प्रत्येक शनिवार को दोनों विद्यालयों के बच्चे एवं अध्यापकगण् मिलकर यज्ञ करते हैं। प्रत्येक वैदिक पर्व पर यज्ञ का आयोजन किया जाता है जिसमें दोनों विद्यालयों के बच्चे व अध्यापक भाग लेते हैं तथा सत्संग का लाभ उठाते हैं। बच्चों में इन संस्कारों का श्रेय पूर्व मन्त्री स्वर्गीय श्री श्याम लाल सल्होत्रा, सेवानिवृत प्राचार्या श्रीमती शान्ता सल्होत्रा और डॉ० विमला प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र की पूर्व मुख्याध्यापिंका श्रीमती सन्तोष शर्मा जी को जाता है।

मांसाहार–मानवता या पशुता

♦भगवती प्रसाद पंत, प्रधान, आर्य समाज चम्बा

मनुष्य सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी और परमात्मा की प्रतिमूर्ति है। परमात्मा की प्रतिमूर्ति यदि निर्दोष, मूक और उपयोगी पशु पक्षियों एवं जीवों को मारकर खा जाए अथवा उनको सताने में, उनका अमानुषिक अत्याचार करने में रस ले तो उसका सर्वश्रेष्ठत्व कहां रहा ? मनुष्य का श्रेष्ठत्व निर्दयी, निष्ठुर और क्रूर बनने में नहीं अपितु धर्मात्मा बनने और प्राणी मात्र से प्रेम, दया और सहानुभूति का व्यवहार करने में है क्योंकि वेद की आज्ञा है "मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।" अर्थात् सब प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखना चाहिए। चाहे वह मुनष्य हो, पशु हो, पक्षी हो अथवा अन्य जीव हो।

परमात्मा की सृष्टि से प्रेम करना परमात्मा से प्रेम करना होता है। दया धर्म का मूल है। क्रूर और हिंसक पुरूष न तो धर्म के तत्व को जान सकते हैं और न परमात्मा को प्राप्त कर सकते हैं। सृष्टि के मूल और निर्दोष प्राणी सृष्टि के सरताज से यह उचित रीति से आशा कर सकते हैं कि वह स्वयं जीता हुआ उन्हें भी जीवित रहने देगा। उन्हें भी अपने समान आयु और भोग भोगकर अपनी मृत्यु मरने देगा। परन्तु मनुष्य उन्हें मारकर और खाकर बहुत बड़ा पाप करता है।

आजकल संसार में मांस भक्षण का प्रचलन बहुत बढ़ रहा है। हमारे देश भारतवर्ष में भी दिन–प्रतिदिन इसका प्रचलन बढ़ता ही जा रहा है। यह बहुत दुःख और शोक की बात है। वेद–शास्त्रों में जहां राक्षसों की गिनती की गई है वहां उनका 'अण्डादाः' अण्ड़ों को खाने वाला, 'मांसादाः' मांस खाने वाला, और 'पिशाचाः' कच्चे मांस को खाने वाला, 'सुरापाः' शराब पीने वाले शब्दों से कहा गया है और जहां मनुष्यों अथवा देवताओं को गिनाया गया है वहां उन्हें 'दुग्ध ापावाः' दूध पीने वाले, 'घृतपावाः' घृत पीने वाले, 'सोमपाः' सोम रस पीने आदि शब्दों से कहा गया है।

वेद का आदेश है–'मनुर्भव जनय दैव्यं जनम्"–हे मनुष्य! तु मनुष्य बन, और अपनी आने वाली पीढ़ी को दिव्य बना। मानव और पशु पक्षियों में चार चीजें समान रूप से पाई जाती हैं– १. आहार २. निद्रा ३. भय ४. मैथुन। मानव और पशु में केवल मात्र विवेक का अन्तर होता है। मानव शरीर पाकर भी यदि कोई पशुता की पराकाष्ठा को लांघ जाए तो उसे आप मानव की उपाधि देंगे या पशु की ?

मांसाहार विषय पर किसी भी दृष्टिकोण से गंभीरतापूर्वक विचार किया जाए तो यह प्रमाणित होता है कि मानव के लिए मांसाहार एक अनैतिक कर्म है। प्राकृतिक रूप से एक मांसाहारी प्राणी यदि किसी जीव को मारकर खाता है तो कोई दोष नहीं है। क्योंकि प्रकृति ने उसे उसी के ऊपर आश्रित किया है। अब हमें यह विचार करना होगा कि मानव का शरीर प्राकृतिक रूप से मांसाहारी है या शाकाहारी।

१. <u>प्राकृतिक शारीरिक संरचना की दृष्टि से</u> :

क. मांसाहारी प्राणी पानी को जीभ से लप–लप कर पीता है जबकि शााकाहारी प्राणी पानी को ओंठ की सहायता से पीता है।

ख. मांसाहारी प्राणी की आंखें प्रायः गोल होती है जबकि शाकाहारी प्राणी की आंखें हिरण जैसी लम्बी होती हैं।

ग. मांसाहारी का पसीना जीभ के द्वारा बाहर निकलता है जबकि शाकाहारी का पसीना पूरे शरीर के रोम–छिद्र से बाहर निकलता है।

घ. मांसाहारी प्राणी की आंत छोटी होती है जबकि शाकाहारी प्राणी की आंत उससे तीन गुणा लम्बी होती है।

ङ. मांसाहारी के दान्त नुकीले तथा अलग–अलग होते हैं जबकि शाकाहारी के दान्त चपटे और पैने होते हैं।

च. मांसाहारी के नाखून तेज हथियार के समान मजबूत और तेज होते हैं जबकि शाकाहारी के नाखून नरम चपटे होते हैं।

२. <u>स्वास्थ्य की दृष्टि से</u> : स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यदि इस पर विचार किया जाए तो हम पाते हैं कि मांस, मछली और अण्डों से जितना हमें पोषक तत्व नहीं मिलता, उससे अधिक रोग उत्पन्न करता है। क्योंकि अनुसन्धान केन्द्र के अनुसार अण्ड़ों में सालमोनेला विष पाया जाता है। मांसाहारी भोजन खाने से अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं। मांस, मछली तथा अण्ड़ों में अल्प मात्रा में प्रोटीन पाया जाता है जबकि शाकाहारी पदार्थों में इसकी अपेक्षा दो–तीन गुणा अधिक प्रोटीन पाया जाता है। कार्बोहाइट्रेड जोकि हमारे शरीर में ऊर्जा का स्त्रोत है, मांसाहारी चीजों में बिल्कुल भी नहीं पाया जाता है। अतः स्वास्थ्य की दृष्टि से सिद्ध होता है कि स्वस्थ रहने वाले मुनष्य को मांसाहार बिल्कुल नहीं करना चाहिए।

३. <u>आध्यात्मिक दृष्टिकोण</u> : संसार में जितने भी जीव हैं, ईश्वर ने समान रूप से सबको बनाया है। सबको समान रूप से जीवन जीने का अधिकार दिया है। इस संसार में सब प्राणियों को जो अपने समान जानता है, वही वास्तव में ज्ञानी है। नीतिकार भी यही कहता है कि "आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्" अर्थात् अपने प्रति विपरीत आचरण दूसरों के लिए न करे। जब हम किसी को जीवन दे नहीं सकते तो हमें किसी को मारने का अधिकार नहीं है। याद रखो, प्रकृति किसी को माफ नहीं करती। आपका कर्म किस प्रकार का किया होगा, ईश्वरीय विचित्र दण्ड व्यवस्था के

अनुसार उसी प्रकार की प्रतिक्रिया मिलेगी। "अवश्यमेव भोक्तव्यम् कृत कर्म शुभाशुभम्"। मांस खाने वाले सभी राक्षस के समान हैं। सन्त कबीर जी कहते हैं कि आज जो दूसरों की गर्दन काटता है, कल उसकी गर्दन अवश्य काटी जाएगी।

"जब जाएगा जहां से कुछ भी न साथ होगा।
दो गज कफ़न का टुकड़ा तेरा लिबास होगा।।

जरा सोचो, अगर तुम्हें साधारण सी ठोकर लगती है तो कितना दर्द महसूस होता है और जब प्राण संकट में होता है तो 'ओ गॉड़, अल्ला–अल्ला, भगवान–भगवान' चिल्लाते हो, कुछ भी करने के लिए तैयार हो जाते हो। अपनी प्रतिष्ठा भी दांव पर लगा देते हो और चाहते हो कि किसी तरह मेरा या मेरी बेटी या पति की जान बच जाए। परन्तु मुर्गे या किसी अन्य जानवर की टांग या कलेजी जब मुंह में डालकर कुत्ते की भान्ति चबाते हो तो कभी सोचा है कि यह कहां से आया है? क्यों नही सोचते? अभी भी वक्त है इस पर गम्भीरता से विचार करो। और इस घृणित कर्म को त्याग कर पाप का भागी होने से बचो। मांस मनुष्य का प्राकृतिक भोजन होता तो यह कच्चा भी अच्छा लगता। क्योंकि किसी भी शाकाहारी पदार्थ को हम कच्चा खाकर रह सकते हैं और अच्छा भी लगता है। मांसाहार, हिंसात्मक और अनैतिक कर्मों को जन्म देता है। दुनियां में जितने भी हिंसात्मक और वारणात्मक अत्याचार होते हैं तो उसमें मांसाहार और शराब का प्रमुख योगदान होता है।

मांस मनुष्य का स्वाभाविक भोजन नहीं है। यदि मनुष्य स्वभाव से मांस भक्षी होता तो उसके शरीर की रचना मांसाहारी जीवों के सदृश होती। वह भी मांसाहारी पशुओं कुत्ते, बिल्ली आदि की तरह जीभ से पानी पीता और अपने दान्तों से मांस काटता। आज तक कोई मांसाहारी मनुष्य अपने शरीर की रचना मांसाहारियों के समान नहीं कर सका। यद्यपि वह लाखों करोड़ों वर्षों से मांस खाता चला आ रहा है। मनुष्य का बच्चा बिना सिखाए मांस नहीं खाता क्योंकि उसे स्वभाव से उससे प्रेम नहीं होता। उसका स्वाभाविक प्रेम दूध, फल, दाल, रोटी आदि शाकाहारी वस्तुओं से होता है। बिल्ली का बच्चा चूहे को देखकर ही उसको मारने दौड़ता है परन्तु मनुष्य का बच्चा ऐसा नहीं करता।

इस प्रकार किसी भी दृष्टिकोण से इस पर विचार किया जाए तो मांसाहार मानव के लिए त्याज्य और अभक्ष्य साबित होता है। अन्त में यही कहना चाहूंगा–

"तेरी थोड़ी सी कोशिश से महक जाएगा ज़माना।
बदल डालो अपने को यही है महर्षि दयानन्द का नज़राना।।
गर करो कोशिश थोड़ी अपनी प्रवृति के बदलने तक।
गूंजेगा स्वर ऋषि दयानन्द का जमीं से आसमां तक।।"

मकर संक्रान्ति

♦आचार्य सूरत राम, आर्य समाज चम्बा

हमारे जीवन में कई संक्रान्तियां आती हैं और चली जाती हैं। परन्तु हम उनसे कुछ सीख नहीं पाते। मकर संक्रान्ति भी हमारे जीवन में कई बार आई और चली गई। मकर संक्रान्ति का आर्य पर्वों में विशेष महत्त्व है। क्योंकि इस संक्रान्ति से सूर्य का उतरायण शुरु हो जाता है। उतरायण की स्थिति इस भौतिक जगत के लिए वृद्धि, विकास व उन्नति समृद्धि का सूचक है। उतरायण के आने पर दिन जो पल–पल घटता जा रहा था, अब वह बढ़ना शुरु हो जाता है। दिनों के बढ़ने से सूर्य का प्रकाश, उसकी ऊर्जा जड़ जंगम जगत् को पर्याप्त मात्रा में मिलने लगती है। उसी के परिणामस्वरूप औषधियां वनस्पतियां फूलने–फलने लगती हैं। धीरे–धीरे ऋतुराज बसन्त के आने पर सम्पूर्ण धरती षोड़श श्रृंगार की हुई दुल्हन की भान्ति शोभायमान हो जाती है।

विचारणीय विषय तो यह है कि हमारे वैयक्तिक और सामाजिक जीवन में मकर संक्रान्ति कब आएगी? हमारी आत्मा रुपी सूर्य के जीवन में उतरायण कब आएगा? हमारी स्थिति तो दक्षिणायन की चल रही है। वैयक्तिक जीवन में जिन मानवीय मूल्यों (प्रेम, करूणा, सौहार्द, सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य) की वृद्धि चाहिए थी, उनका प्रेम, सौहार्द, सहानुभूति व भ्रातृभाव का सर्वथा अभाव होता जा रहा है। यही कारण हैं कि समाज में संगठन के स्थान पर विघटन होता जा रहा है। सदस्य संख्या न्यून से न्यूनतम होती जा रही है।

यह मनोवृति, यह उदासीनता, यह मानसिकता हमारे दक्षिणायन की परिचायक नहीं तो और क्या है? हमारे जीवन काल में कब तक यह स्थिति बनी रहेगी? कब तक हम इन पर्वों की मात्र औपचारिकताओं का बोझ ढ़ोते रहेंगे।

ईश्वर आर्य जनों को सद्बुद्धि दे ताकि हम लोग इन पर्वों से कुछ सीख ले सकें और अपने जीवन को सफल व सार्थक करते हुए आर्यत्व से ओतप्रोत होकर "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के वैदिक उद्घोष को सार्थक करने हेतु प्रयत्नशील हो सकें। पथिक जी के शब्दों में–

"भगवान आर्यों को ऐसी लग्न लगा दे।
वैदिक धर्म की खातिर मरना इन्हें सिखा दे।।"

समृद्ध राष्ट्र ही गौरव का प्रतीक है।

•स्वामी सुमेधानन्द दयानन्द मठ, चम्बा

अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए अपने अंदर राष्ट्र प्रेम की अग्नि प्रज्वलित करो। बच्चों को राष्ट्र भक्ति का पाठ पढ़ाओ। उन शौर्य गाथाओं को पढ़ो और पढ़ाओ जो इतिहास के पन्नों में अंकित हैं। नेता जी सुभाष चंद्र बोस, भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खान आदि वीरों को क्या कभी पढ़ा है ? कभी हल्दी घाटी जाकर महाराणा प्रताप की शौर्य गाथाओं को सुनो। देशवासी इस सत्य को जानें कि देश रहेगा तो वे भी रहेंगे, देश का अस्तित्व ही मिट गया तो फिर कहां जाओगे ?

<u>यह कैसी भूल हो रही है</u> : आज वैध अथवा अवैध किसी भी तरीके से धन कमाना ही उद्देश्य बन गया है जिससे अनेक आपत्तियां आ गई हैं। जिस प्रकार टूटे–फूटे घर में परिवार सुरक्षित नहीं रह सकता उसी प्रकार कमज़ोर राष्ट्र में भी उस राष्ट्र के नागरिक सुरक्षित नहीं रह सकते। राष्ट्र की रक्षा के लिए भी राष्ट्राध्यक्ष का बुद्धिमान, बलवान, दूरदर्शी एवं समृद्ध होना आवश्यक है। प्रजातांत्रिक पद्धतियों में जिसके पास जनबल, बाहुबल एवं धनबल होता है वही विजयी होकर सत्ता के शीर्ष पर पहुंच जाता है। देश की संसद एवं विधानसभाएं तो वे मंदिर हैं जहां देश के चहुंमुखी विकास के लिए योजनाएं बनती हैं परन्तु दुर्भाग्य से ये संस्थाएं स्वार्थी, अयोग्य एवं अपराधी लोगों के अखाड़े बनकर रह गई हैं। वोट की राजनीति के कारण देश के नागरिक बंट गए हैं या बांट दिए गए हैं। हमने मानवता की अपनी पहचान ही खो दी है। उच्च पदों पर बैठे लोग आर्थिक घोटाले कर रहे हैं। देश कैसे बचेगा ?

<u>आखिर कारण क्या है</u> ? वर्तमान में सरकारों ने नागरिकों को धन के भंवर में बुरी तरह फंसा दिया है। आज सबका उद्देश्य धन कमाना रह गया है। जो उम्र पढ़ने में लगनी चाहिए थी वह नाच–गानों में लग रही है। मानव संसाधन मंत्रालय नित्य शिक्षा के क्षेत्र में नए–नए विध्वंसकारी प्रयोग कर रहा है। क्या देश इन योजनाओं से प्रगति पथ पर बढ़ेगा ? धन आवश्यक वस्तु है परन्तु धन की अत्याधिक लिप्सा मनुष्य को पतन के गर्त में भी धकेल देती है।

<u>मीडिया सशक्त माध्यम है</u> : समाचार पत्र हों या टी. वी. चैनल, देश में क्रांति ला सकते हैं। आज असत्य का पर्दाफाश एवं सत्य को उजागर करने में मीडिया सबसे सशक्त माध्यम है। मीडिया वाले ठीक–ठीक समाचार देकर राष्ट्र को जगाएं। इस देश को इसका खोया हुआ गौरव दिलाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं। देश को सशस्त्र क्रांति की नहीं अपितु वैचारिक क्रांति की <u>आवश्यकता है। श्रेय मार्ग तथा प्रेय मार्ग, सत्य मार्ग तथा</u> असत्य मार्ग यही तो दो मार्ग हैं जिन पर मनुष्य चलते हैं। मीडिया से संबंधित जागरूक प्रहरियो! देश को श्रेष्ठ मार्ग पर चलाने का प्रयास करें। प्रभु आपका कल्याण करेंगे। 'माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्या' यह जन्मभूमि हमारी माता है तथा हम इसके पुत्र हैं। मातृभूमि तुझे नमन है। तेरे गौरव की रक्षा के लिए हम पूरा प्रयास कर सकें प्रभु ऐसा सामर्थ्य हमें दे। पराधीन देश को स्वाधीन कराने में देशभक्तों ने जो बलिदान दिए थे वे निरर्थक न हो जाएं। इसका ध्यान रखें। देश आपको पुकार रहा है। 'जननीजन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' जन्म देने वाली मां तथा हमें अन्न, जल, फल आदि से पुष्ट करने वाली धरती माता स्वर्ग से भी महान् है। इसी के लिए जिएं व इसी की खुशहाली के लिए बलिदान हो जाएं। इसी में जीवन की सार्थकता है।

<u>दयानन्द मठ घण्डरां का वार्षिकोत्सव</u>

प्रिय सज्जनों,

आपको यह जानकर अति प्रसन्नता होगी कि सन्त शिरोमणि स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के ११३वें जन्मदिन की स्मृति में दयानन्द मठ घण्डरां, तहसील इन्दौरा, जिला कांगड़ा (हि० प्र०) में यजुर्वेद महायज्ञ तथा सत्संग का आयोजन **<u>दिनांक 22 मार्च (शुक्रवार) से 24 मार्च (रविवार) 2013 तक</u>** स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती, अध्यक्ष, दयानन्द मठ घण्डरां की अध्यक्षता में किया जा रहा है।

<u>आमन्त्रित विद्वान्</u> :

पूज्य स्वामी शोभानन्द जी महाराज दयानन्द मठ, दीनानगर (पंजाब), स्वामी माधवानन्द जी सरस्वती दयानन्द मठ, इन्दौरा, श्री सत्य प्रकाश जी मेंहन्दीरत्ता प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा (हि० प्र०), श्री कृष्ण चन्द आर्य प्रधान, खरीहड़ी आर्य समाज सुन्दर नगर (उप–प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि० प्र०), श्री नारायण जी आचार्य महोपदेशक, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्री रोशन लाल बहल जी (कार्यकारी प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा (हि० प्र०), श्री सुरेश कुमार जी शास्त्री चम्बा, श्री पं. हरिश्चन्द्र, वैदिक प्रवक्ता (हि० प्र०), शास्त्री यतीन्द्र जी व अन्य संतजन एवं आर्यजन पधार रहे हैं।

इस महायज्ञ में आप सभी सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक :

सन्तोषानन्द सरस्वती एवं न्यास दयानन्द मठ,
घण्डरां, तहसील इन्दौरा, जिला कांगड़ा (हि० प्र०)
सम्पर्क सूत्र : ०६४१८२–७०८२५, ०६६२५८–४४४७४

"वर्तमान परिप्रेक्षय में आर्य समाज"

♦सुख लाल शास्त्री, उपमन्त्री, आर्य समाज चम्बा

कभी समय था, जब आर्य समाज ने देश की उन्नति में चतुर्दिक् सहयोग दिया और देश का पथ प्रदर्शन किया, देश को स्वतन्त्र कराने में जिन लोगों ने सहयोग किया उनमें ८० प्रतिशत लोग आर्य समाज से प्रभावित थे। आर्य जनता ने स्वतन्त्रता संग्राम में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया और बलिदान दिए। जिन में, लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द, राम प्रसाद बिस्मिल,श्याम जी कृष्ण वर्मा, भगत सिंह आदि अनेकों क्रान्तिकारी आर्य समाज की ही देन थे। बाद में हिन्दी आन्दोलन, हैदराबाद मुक्ति आन्दोलन, गौ रक्षा आदि कई आन्दोलनों का सूत्रपात किया और उनमें सफलता प्राप्त की।

परन्तु समय बीतने के साथ–साथ आर्य समाज के कार्यों में कुछ शिथिलता सी आ गई, वे पुरानी पीढ़ी के लोग जो आर्य समाज की जान थे, दिवंगत हो गए। केन्द्रीय नेतृत्व का अभाव होने के कारण आर्य समाज की गतिविधियां ढ़ीली हो रही है। आर्य समाज ने जो महत्वपूर्ण कार्य किये थे, वे जनता के सामने नहीं आ रहे, उस का प्रमुख कारण राजनीति में हमारे नेताओं का अभाव है। स्वामी दयानन्द जी ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में तीन आर्य सभाओं का उल्लेख किया है, उनमें दो पहली 'विद्यार्य सभा' और 'धर्मार्य सभाओं' ने तो पर्याप्त कार्य किये हैं विद्या के क्षेत्र में आर्य समाज ने जो कार्य किया है, उसका कोई सानी नहीं। परन्तु देश की राजनीति में आर्य समाज की पैठ न होने के कारण आर्य समाज के कार्य समाज के सामने नहीं आए। केवल आर्य पत्र पत्रिकाओं तक ही सीमित रहे।

राजनीति के बारे में आर्य समाज की सोच सामने नहीं आई, फलस्वरूप वेदों और मनुस्मृति आदि धर्म ग्रन्थों में राजनीति के बारे में क्या लिखा है, वह समाज के सामने उजागर नहीं हुआ। यही कारण है कि वर्तमान राजनीति का स्तर गिरता जा रहा है। जिनको भारतीय संस्कृति का क, ख, भी नहीं आता वे लोग राजनीति में उच्च पदों पर विराजमान हैं, और अपराधी किस्म के लोगों का राजनीति में प्रवेश हुआ है। प्रचार की कमी : आज के युग में जहां अन्य क्षेत्रों में बदलाव आया वहां हमें आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार हेतु आधुनिक साधनों का लाभ उठाना चाहिए, जैसे दूरदर्शन आधुनिक मीडिया। टी. वी. चैनलों में आर्य समाज के कार्यक्रमों का प्रर्दशन होना चाहिए जिसमें महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर आधारित धारावाहिक का निर्माण होना चाहिए जो मुम्बई सम्मेलन में (प्रकाश नामक) धारावाहिक प्रस्तावित हुआ था। आर्य समाज के नेताओं के जीवन पर आधारित कार्यक्रमों का प्रसारण होना चाहिए अब समय आ गया है कि स्वामी दयानन्द जी के जीवन पर फिल्म बनाई जाए, जिससे सर्व साधारण जनता में आर्य समाज के किए कार्यों एवं सिद्धान्तों का प्रचार हो, नहीं तो आज कुरीतियां पुनः सिर उठा रही हैं। पाखण्ड एवं अन्ध विश्वाश पुनः जाग रहा है। अगर हम गहरी नींद में सोते रहे तो सत्य का प्रकाश फिर से ढक सकता है। आवश्यकता है आज लग्नशील निष्पक्ष कार्यकर्ताओं की जो केवल पद के लोभी, आर्य समाज के अधिकारी नहीं, जिनमें आर्य सिद्धान्तों में श्रद्धा न हो ऐसे अधिकारी न बनाये जायें। निष्ठावान चरित्रवान लोग आगे आयें।

शुभ समाचार

यह बड़े हर्ष का विषय है कि आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सत्य प्रकाश मेहन्दीरत्ता और पूर्व सभा अध्यक्ष स्वामी सुमेधानन्द जी द्वारा लम्बे समय के संघर्ष के उपरांत हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में महर्षि दयानन्द चेयर सक्रिय हो गई है। इस हेतु आवश्यक नोटिफिकेशन प्राप्त हो गई है। प्रदेश की राजा वीरभद्र सिंह सरकार इसके लिए धन्यवाद की पात्र है। आखिर हमारे उपरोक्त आर्य नेताओं के प्रयास सफल और साकार हुए। हिमाचल की आर्य जनता में हिमाचल सरकार के इस निर्णय की सर्वत्र प्रसंशा की जा रही है। इस देश और प्रदेश के कोने–कोने से युवक महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों, शिक्षाओं, सुधारों और वेद ज्ञान के प्रचार–प्रसार में किये गये समस्त कार्यों पर जहां शोध करके एक नया कीर्तिमान स्थापित करेंगे वहीं दूसरी ओर पी. एच. डी. की उपाधि भी प्राप्त करेंगे। हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में अब तक केवल तीन चेयर ही सक्रिय थीं। अब महर्षि दयानन्द और श्यामा प्रसाद मुखर्जी चेयर सक्रिय हो गई है। हिमाचल प्रदेश के युवक और युवतियों को सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी समाज सुधारक, धर्म धुरन्धर वेदों के आधुनिक युग के भाष्यकार देव दयानन्द पर शोध करने का समुचित अवसर प्रदान हो गया है। प्रदेश की समस्त आर्य जनता हिमाचल प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री वीरभद्र सिंह का ह्वदय से आभार व्यक्त करती है। सरकार द्वारा महर्षि दयानन्द चेयर को स्थापित करने के इस निर्णय से आर्यों का सपना पूरा हो गया है। यह सरकार का एक ऐतिहासिक निर्णय है, जिसके लिए आर्यजन लम्बे समय से प्रतीक्षा कर रहे थे। हिमाचल की आर्य जनता को पूर्ण आशा है कि श्री वीरभद्र सिंह सरकार महर्षि दयानन्द जन्म दिवस को वैकल्पिक अवकाश के स्थान पर निकट भविष्य में सार्वजनिक अवकाश घोषित करेगी।

–सम्पादक

पं. अमरनाथ महाजन स्वतन्त्रता सेनानी (संक्षिप्त जीवनी)

•विक्रमादित्य महाजन, मन्त्री, आर्य समाज चम्बा

श्री अमरनाथ जी का जन्म १५ अप्रैल १९१० को माता श्रीमती हुक्मी देवी तथा पिताश्री फेरूमल महाजन के मुशाहना नामक ग्राम, तहसील शंकरगढ़, जिला गुरदासपुर स्थित निवास पर हुआ। आप सात भाई बहिनों में से छठे (छोटे) नम्बर पर थे।

आपकी प्रारम्भिक शिक्षा ढुलाह नामक ग्राम में तथा छठी से नौंवी–दसवीं तक की शिक्षा कन्जरूड़ डी. ए. वी. विद्यालय में हुई। आपको फारसी, उर्दु, संस्कृत, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषाओं का अछा ज्ञान था। उपदेशक विद्यालय लाहौर से सिद्धान्त रत्न का चार वर्षीय कोर्स भी किया। यही शिक्षा बाद में जीवन यापन का साधन बन गई।

आपने सर्वप्रथम स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी को दिये वचनानुसार आर्य प्रतिनिधि सभा (लाहौर) में उपदेशक का कार्य किया। आपका प्रिय कार्यक्षेत्र चकबाल तथा हिमाचल रहा। आपने स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के आग्रह पर अपनी नौकरी का त्याग कर सन् १९३९ मे निजाम हैदराबाद के विरूद्ध आर्य समाज द्वारा आयोजित सत्याग्रह में 'आर्य सत्याग्रहियों' का एक जत्था पेशावर से लेकर हैदराबाद के साथ चम्बा जिला के दुर्गम एवं दूरदराज के गांवों में जाकर गांव वासियों में प्रचार–प्रसार किया। कई बन्धु जो लोभवश या किसी प्रकार के दवाब में आकर मुस्लिम या ईसाई बन गये थे, उनको शुद्ध कर पुनः आर्य वैदिक धर्म में प्रवेश दिलवाने में सहायता की। आप १९६८ में आर्य समाज दालबाजार लुधियाना में पुराहित नियुक्त हुए। आपने दस वर्षों तक लुधियाना में ही धर्म प्रचार का कार्य लग्न एवं निष्ठा से किया। आपको देश की कई अन्य आर्य समाजों ने भी वेद प्रचार आदि समाज सुधार के कार्यों के लिए निमन्त्रित एवं सम्मानित किया।

आपकी धर्मपत्नी श्रीमति विष्णु देवी जोकि धार्मिक विचारों वाली परन्तु मूर्ति पूजा में विश्वास रखनी वाली कन्या थी। विवाह के पश्चात् उन्हें भी यह अनूभूति हुई कि आर्य समाज ही धर्म के सच्चे स्वरूप को दुनिया को दिखला सकता है, अतः उन्होंने भी अपने पूज्य पतिश्री अमरनाथ जी की आज्ञानुसार हवन–यज्ञ, संध्या–प्रवचन (वैदिक रीति से) करना प्रारम्भ कर दिया। श्रीमति विष्णु देवी को अब पाषाण पूजा तथा व्रतादि के कार्य व्यर्थ प्रतीत होने लगे तथा उन्होंने इन व्यर्थ के कार्यों के प्रति अरूचि दिखलाते हुए इनका निषेध अपना लिया।

श्री अमरनाथ जी के धार्मिक प्रचार के कार्यों में श्रीमति विष्णु देवी जी भी बढ़–चढ़ कर भाग लेती तथा स्वयं भी वैदिक गीतों के माध्यम से धर्म प्रचार का कार्य करतीं। जब श्री अमरनाथ जी ऊना स्थानांतरित होकर गए तो श्रीमति विष्णु देवी ने वहां एक महिला सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की तथा उसी के माध्यम से वह महिलाओं में धर्म प्रचार का कार्य करने लगीं।

जब श्री अमरनाथ जी को हिमाचल प्रदेश के चम्बा शहर के आर्य समाज में पुरोहित के कार्य के लिए सभा द्वारा भेजा गया तो श्रीमति विष्णु देवी को भी परिवार सहित यहीं आना पड़ा। उनकी चार सुपुत्रियां तथा चार सुपुत्र हैं। सभी धार्मिक विचारों वाले तथा स्वावलम्बी हैं। श्रीमति विष्णु देवी आर्य समाज चम्बा की सबसे सशक्त महिला मन्त्री रहीं। इन्होंने तीन वर्ष तक मन्त्री के रूप में आर्य समाज की उन्नति में विशेष योगदान दिया। चम्बा आने पर श्रीमति विष्णु देवी जी को अपनी हमउम्र तीन बहिनों का क्रमशः श्रीमति कौशल्या देवी महाजन, श्रीमति निरंजना चोपड़ा तथा श्रीमति संतोष शर्मा जी का साथ मिल गया। तथा सभी साथ मिलकर पूर्ण उत्साह से धर्म प्रचार का कार्य करने लगीं। श्रीमति विष्णु देवी अपने जीवन के अस्सीवें वर्ष में चल रही हैं। प्रभु कृपा से पूर्णतया स्वस्थ हैं। घर पर प्रतिदिन हवन–यज्ञ करती हैं तथा परमपिता परमात्मा का आभार प्रकट करते हुए अपनी जीवन को धन्य मानती हैं। अपने पूज्य पति श्री अमरनाथ जी के धर्म प्रचार के कार्यों को गति देने के लिए ही उन्होंने 'प्रभु समर्पण' नाम की पुस्तक को छपवा कर आर्य परिवारों में बंटवाने की पुनीत योजना बनाई है।

श्री अमरनाथ जी को उनके भारत की स्वतन्त्रता हेतु दिये सक्रिय सहयोग का सम्मान करते हुए स्वतन्त्र भारत की केन्द्रिय सरकार ने आपको वर्ष १९८४–८५ में स्वतन्त्रता सैनानी सम्मान से सम्मानित करते हुए पैंशन (सम्मान राशि) प्रदान करनी आरम्भ कर दी। हिमाचल सरकार ने भी १९९५ से यह सम्मान दिया तथा मासिक सम्मान राशि सहित अन्य सुविधाएं देकर गौरव बढ़ाया।

श्री अमरनाथ जी का १४ सितम्बर सन् २००६ को संक्षिप्त सी अस्वस्थता के पश्चात् देहान्त हो गया। तब आप जीवन के ९६–९७ वर्ष में थे। आपका जीवन साधु स्वभाव वाला प्रभु में अगाध आस्था वाला जीवन था। आप मृत्युपर्यन्त सदैव प्रफुल्लित मन, पुत्र–पुत्रियों, पौत्र–पौत्रियों, दोहते–दोहतियों तथा एक पड़पौत्र सहित सुख–समृद्धि से भरपूर परिवार के मुखिया रहे।

'बेटी है अनमोल'

♦सत्यपाल भटनागर, अखाड़ा बाजार, कुल्लू (हि० प्र०)

युगों से भारतीय नारी माता, पत्नी, बहन, बेटी के रुप में परिवारों में अपनी भूमिका निभाती आई है। उन्होंने अपने प्रेम, त्याग तथा सेवाभाव से समाज के विकास में योगदान दिया है इसीलिए हमारे समाज में नारी को कई सम्मानित रुपों में पूजा जाता है। राष्ट्र की भी भारत माता के रुप में वंदना की जाती है। अनेक त्यौहारों के अवसर पर कन्या पूजन किया जाता है। मनु महाराज ने भी कहा है ''जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवाताओं का वास होता है। ''अतः ये सब उदाहरण इस बात के द्योतक हैं कि नारी पूज्य है तथा हर समाज तथा परिवार के लिए अनमोल है। परन्तु खेद की बात है कि इसी भारत देश में धर्म के नाम पर कन्याओं की दुर्गति की जाती है। दक्षिणी भारत में पैदा होते ही कन्याएँ धर्म के नाम पुजारी व मठाधीशों को समर्पित कर दी जाती हैं। जब कन्या सयानी हो जाती है तो देवदासी के नाम से जानी जाती है। पुजारी और मठाधीश लोग रखैल बनाकर इनके जीवन को भ्रष्ट करते रहते हैं। तस्कर लोग भारत की कन्याओं से विवाह करके, नौकरी का लोभ देकर, खरीदकर या चुराकर नेपाल मार्ग या बांगलादेश के रास्ते मुस्लिम, अरब आदि देशों में व्यापार करके बड़ी दुर्गति करते हैं। इस तरह से देश में लाखों कन्याओं का जीवन नष्ट–भ्रष्ट हो रहा है।

दुर्भाग्य की बात है कि कई परिवार इसलिये बेटी को जन्म लेने ही नहीं देते अर्थात् वह भ्रूण हत्या का सहारा लेकर बेटी को परिवार में आने से रोक देते हैं। इसके पीछे हो सकता है सामाजिक आर्थिक या कोई अन्य कारण हो। परन्तु यह निशचित है कि इस कारण हमारा भविष्य असुरक्षा के कगार पर खड़ा हो गया। राजस्थान में उदयपुर की एक झील में अनेक कन्या भ्रूण मिले हैं। राजस्थान के एक गांव में ११० साल बाद किसी कन्या का विवाह हुआ और बारात आई है। यह तब हुआ जब उस कन्या को छुपाकर बालक की वेशभूषा में नानी के पास अन्य गांव में रखा गया। मानव समुद्र की गहराई और मंगल ग्रह तक के रास्ते नाप चुका है और दूसरी ओर हम भ्रूण हत्या जैसी नई कुरीतियों के जाल में फंसते जा रहे हैं।

कन्या शब्द 'कनी' धातु से निकला है जिसका अर्थ चमकना या प्रकाशित होना है। वास्तव में कन्या घर का प्रकाश है। परन्तु खेद की बात है एक सर्वेक्षण के अनुसार भारत में हर वर्ष ५ लाख कन्याभ्रूण की हत्या की जाती है। कन्या के कम जन्म लेने के मामले शिक्षित वर्ग में अधिक पाए गए हैं क्योंकि पिछले २० वर्ष से जन्म से पूर्व लिंग परीक्षण की सुविधाओं के विस्तार के कारण ऐसा हो रहा है। इन हत्याओं के कारण १९९० में १००० पुरुषों के मुकाबले में स्त्रियों की संख्या ६७२ थी जो २००१ में घटकर ६३३ रह गई है। लिंग अनुपात बिगड़ने से देश में सामाजिक असंतुलन पैदा हो जाएगा जिससे कई समस्याएँ उत्पन्न होंगी। सामाजिक अपराध बढ़ेंगे। असुरक्षा की भंयकर स्थिति उत्पन्न हो जाऐगी। यह ठीक है लड़के से वंश वृद्धि होती है परन्तु बेटी के न होने से मानव समाज का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाएगा। बड़ी विचित्र बात है कि हमारा समाज यह नहीं सोचता है कि यदि पुत्र ही कुपुत्र निकले तो वह वंश की वृद्धि करने वाला नहीं अपितु नाश का कारण बनेगा और पुत्रियाँ श्रीमति इदिरा गांधी, महारानी लक्ष्मीबाई भी बन सकती हैं। यह भी सोचने की बात है कि यदि कन्या ही नहींहोगीं तो वंश–वृद्धि कैसे होगी ? कन्या भ्रूण हत्या का कोई प्रायशचित नहीं है। आजकल बेटियाँ हर क्षेत्र में अग्रणी रह रही हैं। अतः हमें बेटी को बोझ नहीं मानना चाहिए। माता–पिता की अधिक हितचिंतक बेटियाँ ही होती हैं। स्त्रियों को स्वयं जागरुक होकर के पुत्री के जन्म को पुत्र से अधिक सौभाग्य और आनंद का अवसर समझना चाहिए और उनके जन्म को पुत्र के जन्म के समान प्रसन्नता से मनाना चाहिए। नारी को लेकर इस कुरीति का समाधान नारी द्वारा ही किया जाना है क्योंकि भ्रूण हत्या उनकी स्वीकृति के बिना की ही नहीं जा सकती। उन्हें समझना चाहिए कि बेटी अनमोल है और देश और समाज को लिंग अनुपात के महासंकट से बचाने में पूरा सहयोग करना चाहिए।

संघ समाचार

हिमाचल पैंशनर कल्याण संघ के बल्ह खंड की बैठक २८ फरवरी को पंचायत भवन डडौर के प्रांगण में श्री लालमन शर्मा की अध्यक्षता में आयोजित हुई। जिलाध्यक्ष एवं वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री कृष्ण चन्द आर्य ने मुख्यातिथि के रूप में भाग लिया। पैंशनरों की मांगों के लिए आबकारी एवं कराधान मन्त्री श्री प्रकाश चौधरी के माध्यम से मुख्यमन्त्री को २८ जनवरी २०१३ को ज्ञापन दिया गया। इस बैठक में अधिकांश पैंशनरों एवं खंड के पदाधिकारियों ने भाग लिया। महासचिव खेम चन्द ठाकुर, ललित कुमार, रूप लाल ठाकुर, राम सिंह ठाकुर, देवी सिंह, गुरदास, राम कृष्ण, गुरदास, महेन्द्र लाल, माया राम शर्मा ने भी अपने विचार रखे। —सम्पादक

'शहीदे आजम' २३ मार्च पुण्यतिथि पर

♦विनोद स्वरूप, मुख्य प्रबन्ध सम्पादक

२८ सितम्बर १९०७ को जन्मे भगत सिंह अल्पायु में ही भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में कूद पड़े थे। यह क्रान्तिकारी आन्दोलन का दौर था। क्रान्तिकारियों का विश्वास था कि ब्रितानी दमन का प्रतिकार नर्मी नहीं हो सकता। जिस पंजाब प्रान्त के लायलपुर में भगत सिंह का जन्म हुआ वह अब पाकिस्तान में है। लाहौर के ही नेशनल कालेज में शिक्षा ग्रहण करते भगत सिंह के अन्दर क्रान्ति के बीज फूटे। 'नौजवान भारत सभा' का गठन उन्हों ने लाहौर में ही किया। इसी लाहौर में पंजाब केसरी लाला लाजपतराय की मृत्यु का बदला लेने के लिए उन्हों ने राजगुरू, बटुकेश्वर दत्त एवं चन्द्रशेखर आज़ाद के साथ मिलकर लाहौर के सहायक पुलिस अधीक्षक सांडर्स को गोलियों से भून दिया था। सांडर्स की हत्या के जुर्म में ब्रिटिश पुलिस ने अथक प्रयत्नों के उपरान्त भगत सिंह और उस के साथियों को गरिफ्तार किया। २४ मार्च १९३१ को फांसी देने का आदेश हुआ किन्तु अंग्रेज़ सरकार इतनी भयभीत थी कि नियत तिथि से एक दिन पूर्व ही भगत सिंह एवं उस के दो साथियों राजगुरू और सुखदेव को फांसी दे दी गई। तब भगत सिंह की आयु केवल २४ वर्ष थी। २३ मार्च १९३१ को लाहौर की जिस सैन्ट्रल जेल के अन्दर उन्हें फांसी दी गई उसे सन् १९४७ तक 'भगत सिंह चौक' के नाम से जाना जाता था। विभाजन के बाद इस का नाम 'शादमान चौक' रखा गया। १९६१ में इस चौक को ध्वसत कर के एक कालौनी का निर्माण किया गया और उस का नाम 'शादमान फव्वारा चौक' पड़ा। विभाजन के बाद इस का नाम बदला गया। क्यों ? क्या अलग देश बन जाने से पूर्वजों की मिट्टी, वतन की संस्कृति और पुरातन मान्यताऐं बदल जाती हैं ? क्या हिन्दोस्तान की आज़ादी के लिए किये गये सांझे संघर्ष के इतिहास को हम भूला सकेंगे ? पाकिस्तान के प्रगतिशील और 'शहीद भगत संगठन' ने 'शहीदे आजम' भगत सिंह की १०५ वीं जन्म तिथि के अवसर पर उक्त चौक का नाम बदल कर 'शहीद भगत सिंह चौक' करने का प्रस्ताव पास कर सरकार को स्वीकृति के लिए भेजा किन्तु पाकिस्तान के जेहादी संगठनों एवं कट्टरपंथी ताकतों ने इस प्रस्ताव का कड़ा विरोध किया। सरकार ने इस पर विचार करने के लिए २१ सदस्यीय कमेटी का गठन किया जिन में से १३ सदस्य इस प्रस्ताव के विरोध में अपना मत प्रकट कर चुके हैं। अब यह मामला लाहौर हाईकोर्ट में लम्बित पड़ा है और कोर्ट का निर्णय आने तक चौक का नाम बदलने का फैसला स्थगित रहेगा। शहीद भगत सिंह के नाम पर चौक का नाम रखने का विरोध करने वालों का पाकिस्तान के उदारवादी विचारक और अनेक समाचार पत्रों द्वारा घोर निंदा की गई हैं। याद रहे लाहौर या पाकिस्तान के साथ भगत सिंह का नाता केवल लाहौर सैंट्रल जेल में मिली फांसी की सजा तक ही सीमित नहीं है। वह तो शहीदें आजम की मातृभूमि, जन्मभूमि और कर्मभूमि है। शहीदों का विरोध करना पाकिस्तान के जनमानस में इस्लामी जुनून और भारत की सनातनी संस्कृति के प्रति घृणा को उजागर करता है। यह घटनाक्रम पाकिस्तान में पोषित जेहादी मानसिकता को भी रेखांकित करता है जो किसी गैर मुस्लिम के नाम पर किसी भवन, स्मारक या सड़क का नामकरण स्वीकार नहीं करता। खेद है, यह कैसी मानसिकता है ?

संघ समाचार

हिमाचल पैंशनर कल्याण संघ के वरिष्ठ उप–प्रधान तथा जिला मण्डी के प्रधान कृष्ण चन्द आर्य ने सुन्दरनगर खंड के पैंशनरों की बैठक जिसकी अध्यक्षता खंड प्रधान श्री मोहन सिंह की अध्यक्षता में दिनांक २७ फरवरी २०१३ को जवाहर पार्क में हुई, में अपने विचार प्रकट करते हुए हिमाचल प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री वीरभद्र सिंह से अनुरोध किया है कि लम्बे समय से लटकी हुई पंजाब आधार पर समस्त वित्तीय सुविधाओं को हिमाचल प्रदेश के बुजुर्ग पैंशनरों को प्रदान करें जिसमें ६५, ७० और ७५ साल की आयु के बुजुर्ग पैंशनरों को पैंशन में क्रमशः ५, १० और १५ प्रतिशत वृद्धि करना, ५०० रूपये प्रतिमाह चिकित्सा भत्ता देना और दो साल में एक बार धार्मिक स्थलों की यात्रा करना तथा करूणामूलक आधार पर पैंशनरों के परिवार के सदस्यों को नौकरी देना शामिल है। प्रदेश वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री कृष्ण चन्द आर्य ने मुख्यमन्त्री से पैंशनरों के सभी चिकित्सा बिलों को, जोकि बजट के अभाव में अलमारियों में बंद पड़े हैं, तुरन्त अदायगी करने की मांग की ताकि बुजुर्ग पैंशनर अपनी समुचित चिकित्सा करा सकें। उन्होंने मण्डी लोकसभा चुनाव से पूर्व पैंशनरों को पंजाब के आधार पर वित्तिय लाभ अतिशीघ्र देने का अनुरोध किया है ताकि वित्तीय संकट से जूझ रहे बुजुर्ग पैंशनर राहत की सांस ले सकें। उन्होंने सभी पैंशनरों को एकता के सूत्र में बंधने की अपील की तथा पूर्व धूमल सरकार के विरूद्ध चलाये आन्दोलन के लिए भी बधाई दी। इस अवसर पर प्रदेश उप–प्रधान श्रीमती गिरिजा गौतम, भक्त राम आजाद, मंगत राम चौधरी, विनोद स्वरूप ने भी अपने विचार रखे और संगठन को मजबूत बनाने पर बल दिया।

सर्व सम्मति से यह भी निर्णय लिया गया कि प्रदेश पैंशनर कल्याण संघ का स्थापना दिवस २६ मार्च २०१३ को श्री बी. डी. शर्मा के अध्यक्षता में दिव्य मानव ज्योति अनाथालय, डैहर में मनाया जाएगा। दिव्य मानव ज्योति अनाथालय के अध्यक्ष श्री सत्य प्रकाश ने सम्मेलन आयोजित करने की स्वीकृति प्रदान कर दी है।

–सम्पादक

ऋग्वेद यजुर्वेद

स्वामी सर्वानन्द

महर्षि दयानन्द

स्वामी स्वतन्त्रानन्द

आर्यों के तीर्थ

दयानन्द मठ, दीनानगर

जिला गुरदासपुर (पंजाब) को स्थापित हुए 75 वर्ष होने पर

हीरक जयन्ती समारोह

18, 19, 20 अक्टूबर, 2013

को बड़ी धूम–धाम एवं हर्षोल्लास से मनाया जायेगा।
जिसमें आप सब महानुभाव सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक : स्वामी सदानन्द सरस्वती

अध्यक्ष दयानन्द मठ, दीनानगर एवं समस्त परामर्श समिति

सम्पर्क : 01875–220110, 094782–56272, 94172–20110

सामवेद अथर्ववेद

साभार

श्रीमति एवं श्री तारा चन्द

श्रीमति एवं श्री तारा चन्द, पूर्व भाषा अध्यापक, गांव व डा. कनैड़, तह. सुन्दरनगर, जिला मण्डी ने ₹ ५००, समाजसेवी श्री किशोरी लाल सैनी, गांव रोपा, डा. भोजपुर, सुन्दरनगर ने ₹ ५००, श्री सोहन लाल कपिल, प्रधान, गांव व डा. डैहर, तह. सुन्दरनगर ने ₹ ३००, श्रीराम मैडिकल स्टोर, नगरोटा बगवां ने ₹ २००, ओम प्रकाश कायस्था, मेहता गली, नगरोटा बगवां ने ₹ २००, श्री मिलाप चन्द कायस्थवाड़ी रोड़, नगरोटा बगवां ने ₹ २००, डॉ, भुवनेश कायस्था, कायस्थवाड़ी रोड़, नगरोटा बगवां ने ₹ २००, अशोका टैंट हाउस, नगरोटा बगवां ने ₹ २००, श्री ओम प्रकाश नागपाल, धौलाधार कालौनी, नगरोटा बगवां, जिला कांगड़ा ने ₹ २००, मेहर चन्द गुलेरिया, नगरोटा बगवां ने ₹ १०१, श्रीमति सावित्री देवी पत्नी श्री अमर चन्द गुप्ता, गांव व डा. लेदा, तह. सदर, जिला मण्डी ने ₹ १००, श्री सुरेन्द्र आर्य, गांव थनोग, डा. कांगू, तह. सुन्दरनगर ने ₹ १००, श्री देव राज शर्मा, शांति वन, रन्धाड़ा, जिला मण्डी ने ₹ १०० की सहयोग राशि भेंट की। आर्य वन्दना परिवार इनका धन्यवाद व्यक्त करता है।

इस पत्रिका हेतु अपने ईष्ट मित्रों और शुभचिन्तकों को भी सदस्य बनायें। प्रदेश की आर्य समाजों और आप के पावन सहयोग से ही आर्य वन्दना का अंक हर मास प्रकाशित हो रहा है।

आर्य वन्दना शुल्क : वार्षिक शुल्क : ₹ 100, द्विवार्षिक शुल्क : ₹ 160, त्रैवार्षिक शुल्क : ₹ 200

१. आर्य समाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, सुन्दरनगर, (खरीहड़ी) (हि० प्र०)
२. उप–कार्यालय, हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज, मण्डी (हि. प्र.)

आप अपने लेख निम्न पते पर ई–मेल द्वारा भी भेज सकते हैं : arya.bandana@gmail.com

वैचारिक क्रांति के लिए महर्षि दयानन्द की अमर रचना सत्यार्थ प्रकाश अवश्य पढ़ें।

Arya Vandana/Sml/L33/Sm/64/2000

Postal Registered No. : MANDI (HP)/21/2013-15
Valid upto 31-12-2015

सेवा में

बुक पोस्ट

प्रति

आर्य समाज चम्बा के
संस्थापक
स्वामी शान्तानन्द सरस्वती

आर्य समाज चम्बा की
भूमि के दाता
श्री गोपाल दास चिपड़ा

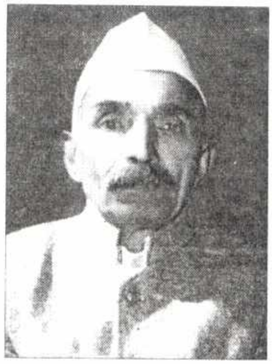

स्वामी शान्तानन्द के
अनन्य भक्त
श्री जवाहर लाल जी

डॉ. विमला देवी
(स्वामी शान्तानन्द की पुत्री)
जिनकी याद में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र
आर्य समाज चम्बा में चल रहा है।

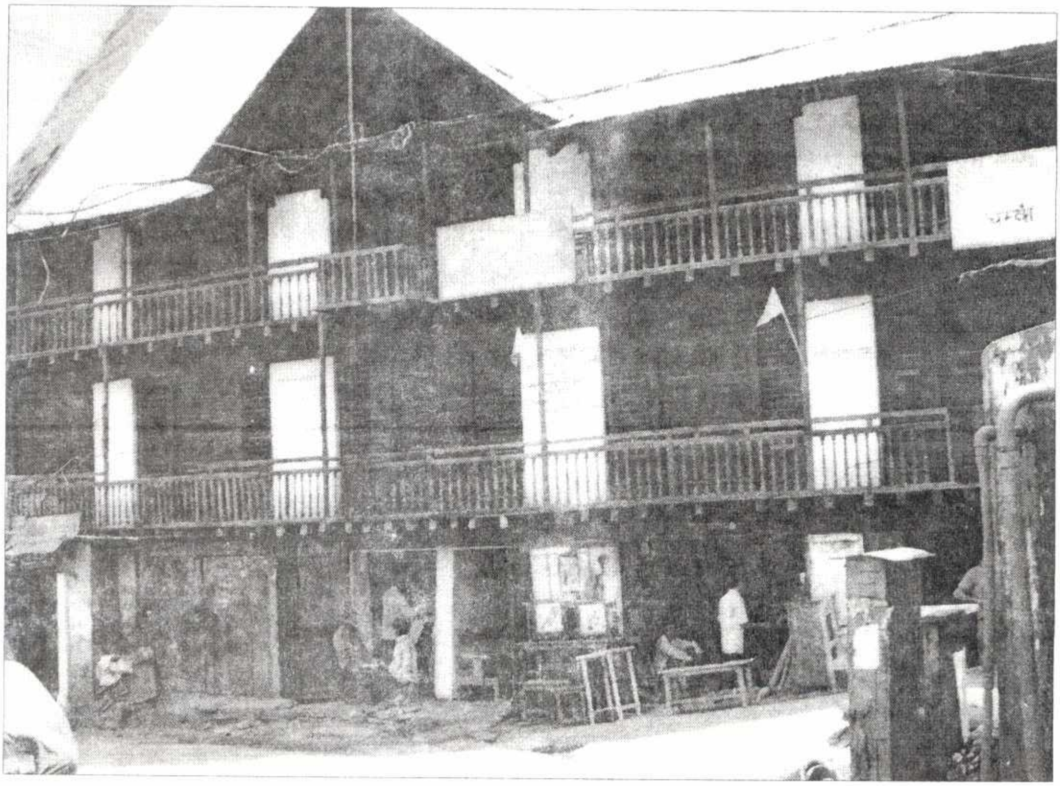

आर्य समाज चम्बा हटनाला मुहल्ला के भवन का बाहरी दृश्य